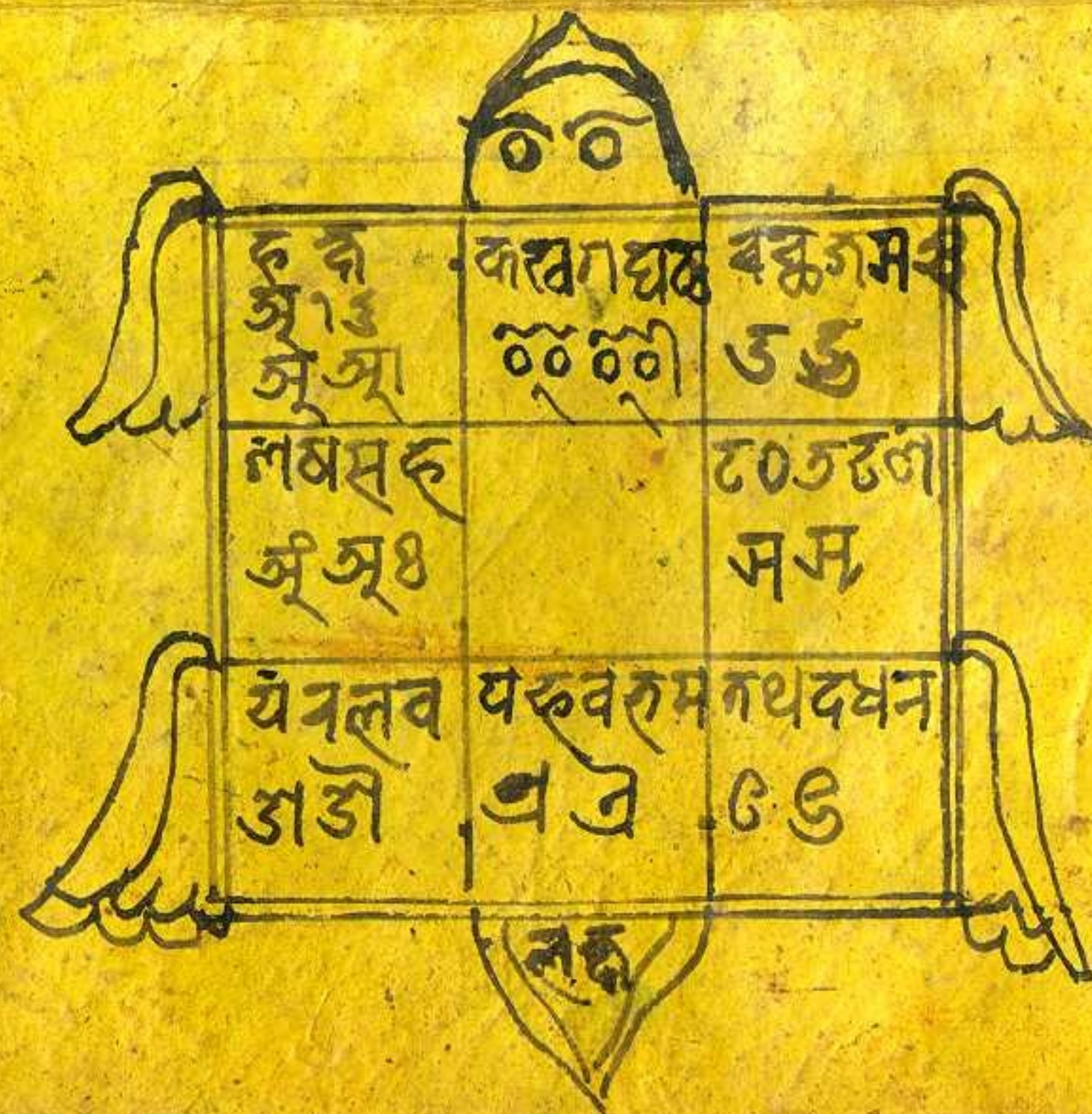






धर्मवक्त्र
 गवुलिस्तन
 शवाडागुलिम
 माहकाकनक
 चालसनावक
 धवक्रवायक
 चालसवाकाव
 ऊययाय॥



लमावाचन कौकूम
 कर्णूल नकाचन
 धधतान कुजय
 सयकोलनाचन
 वाय

कं० अं० ओं० उं० ऐं० ॐ० वं० मूं० दुं० डं० ङं० ऌं० ॡं० अं० अं० णीं० कीं० नें० ॥ स्था० ॥ गी० गार्थ० मान० सा० धर्मा०
त्व० क० य० श्रव० नाना० चतु० र्थ० वे० सू० वी० मा० या० वि० न० या० मि० मू० दू० मू० ॥ ॐ० नि० मा० ला० र० ण० ध० न० ॥
१० या० उ० ण० ण्म० म० हा० वि० श्या० न० य० का० स्या० क० दा० च० न० ॥ वा० श्र० द० हि० लि० नं० दा० ह० न० द० यी० या० उ० ण० क०
बी० ॥ उ० का० च० न० ण० द० वा० लि० वा० ज० य० य० स्या० का० ट० य० ॥ का० ण्या० दि० नी० र्थ० जा० ण० य० स० च० का० टि० य० या०
न्वि० ता० ॥ कि० धू० न० ४० म० क० ला० वि० श्या० य० स्या० सा० का० च्छि० वा० रु० थ० नू० ॥

१ श्रीगुरु ४ गलथिर्क यति ॥ धनं धनं नलिखति ॥ दधक दधक ७ नृसिया याव स्नानया दावव
 मुहिलाव नासिनिमनुनयूजा यथा कर्मता पूजा या यत्नत्वरणा धनया य ॥ धना श्रीगु
 नमस्का नया दाव गायत्री नऊयथा यज्ज धानक धनं लि धमया लनया य ॥ ॥ सैतिक दू
 थवनिथ धनका व ॥ आदी दगा दिग्या लया रुमि कथि जिय १० दगा दिगं स्वादाव आदी ००
 नुपूजा ॥ ॐ ॐ लं ०० न्याय व द रुसा य नवावतवा रुनाय सुला धियनय न कि यूका यसा
 गायसवा रुनाय सय विवाय नमः ॥ ॥ अग्निपूजा ॥ ॐ ॐ ॐ नो अग्नि य न कि रुसा य न जा धि
 यनय नु गवा रुनाय सांगा य सवा रुनाय सय विवा लाय नमः ॥ धा ७ रणा य वा नयूजा ॥ ॥ य
 मपूजा ॥ ॐ ॐ यो यमा य द रुसा य महिष वा रुनाय यगा धियनय न कि रुसा य सवा रुनाय

सय विवा नाय नमः ॥ धा ७ रणा य वा न ॥ ॥ नेमय पूजा ॥ ॐ ॐ ॐ नो नेमया य ख न रुसा य यन व
 हाय य द्वा धियनय न कि यूका य सांगा य सवा रुनाय सय विवाय नमः ॥ धा ७ रणा य वा न ॥
 ॥ ॥ वनू लयूजा ॥ ॐ ॐ ॐ वा वनू लय या स रुसा य कमला वृताय जला धियनय न कि यूका यसा
 गायसवा रुनाय सय विवा नाय नमः ॥ धा ७ रणा य वा न ॥ ॥ वायू य पूजा ॥ ॐ ॐ ॐ वा वायू या य
 ध रुसा य वन वृताय धा ७ रणा धियनय न कि यूका य सांगा य सवा रुनाय सय विवा नाय नमः
 धा ७ रणा य वा न ॥ ॥ कवलय पूजा ॥ ॐ ॐ ॐ का कवला य द रुसा य मनुका वृताय य द्वा धियन
 य न कि यूका य सांगा य सवा रुनाय सय विवाय नमः ॥ धा ७ रणा य वा न ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ लानयूजा ॥ ॐ ॐ ॐ
 हा ॐ ॐ ॐ लाना य पि न रुसा य वृष रा वृताय विद्या धिये य न कि यूका य सांगा य सवा रुनाय

वाक्स्त्रिंशत्कियाकं श्री कृष्णदा व जययासीरुय जयधूनका वस्त्र ॥ लकिवी तथा गिनी यूज
 गत्व लभधन साधकयनिस्त्री यथा लक दक्षिण विय ॥ ॥ थमज करुकायाय ममा विय गिनी
 समना विय जयस्त्रिंशत् ॥ गत्व लभधन ॥ वलि विसर्जन ॥ ॥ लवा वलि विय ॥ रुत्सा निथी ॥ मरु
 त्सा भाद्रस्त्री नी विय माल ॥ अष्टमी वडुदली दादली खिनी माल ॥ आकाहन धमनुन ॥ ॐ ॐ
 ॐ निवाकाल निवालस्वा निवेलसिय यश्वती ॥ सच्चिनाय श्वती निथी ॥ भीनिध कूबूम गुल ॥
 मत्स्यावी सरुलस्वाहा ॥ थना यूजा ॥ ॐ काली स्वमहा देवी यशु यूया वना लिका ॥ ॐ ॐ ॐ
 धूम्र मंथी ॥ गश्वती थो थो ॐ कालया सिनी गुच्छ कालि स्वयूयिनी नमः ॥ स्वाहा ॥ वलि जय ॥
 गा ॐ वययदया ॥ ॐ ॐ ॐ निवाय आगच्छ ॐ ॐ रुद्र अम्नाय स्वाहा ॥ ॥ स्त्रिंशत् ॥ लिवारु की

नगरुषी जवायूषी नक्षत्रयन्मालतिकसूमदेव पूजयन् जगदीश्वरी ॥ यानिमूर्धादर्शय
 न् ॥ विसर्जनयाय ॥ सर्वायवाधकमस्तु ॥ ॥ वक्रजययावनलि ॥ दण्डिसिद्धमवाक ॥ वावा
 रुकल्पयादि ॥ अथ ॥ श्रीस्वस्त्यवता प्रीत्यर्थं हामादिना को द्विर्विजयमहंकविष्य ॥ ॥ ह
 मया दण्डिसिद्धावच्छिन्नार्थं ॥ यावाक ॥ वावाकल्प अथयादि ॥ श्री ३ स्वस्त्यवता प्रीत्यर्थं तथ
 णादिना को द्विर्विजयमहंकविष्य ॥ ॥ तथं लयादण्डिसिद्धावच्छिन्नार्थं वाक ॥ वावाक
 ल्प अथयादि ॥ वाक ॥ श्री ३ स्वस्त्यवता प्रीत्यर्थं मार्जनादिना को द्विर्विजयमहंकविष्य क
 रुमूर्धा अरुसिं वययन्तुमर्दितावय ॥ ॥ मार्जनया दण्डिसिद्धावच्छिन्नार्थं वाक ॥ श्री
 ३ स्वस्त्यवता प्रीत्यर्थं यथाणा को वाक्कलराजद्वियिकविष्य ॥ ॥ वाक्कलराजयादण्डिसिद्ध

दूष्मा कोमावीवाक ॥ वाक ॥ वावाकल्प अथयादि ॥ श्री ३ स्वस्त्यवता प्रीत्यर्थं यथाणा को को
 मावीराजनीर्विजयमहंकविष्य ॥ ॥ वीवरराजनवाक ॥ श्रीस्वस्त्यवता प्रीत्यर्थं यथाणा को
 वीवरराजनप्रकमहंकविष्य ॥ हामवडा कलराजनवाक ॥ यत्रमेष्वरीययापवानरुत्सा स्वयान
 मरुत्सा कृपावखिनीयादावसिद्धयकाशना ॥ ॥ नित्यवर्चनविधिसमाय ॥ ० ॥ ॥

कलक कलम सिद्धि

चववलि



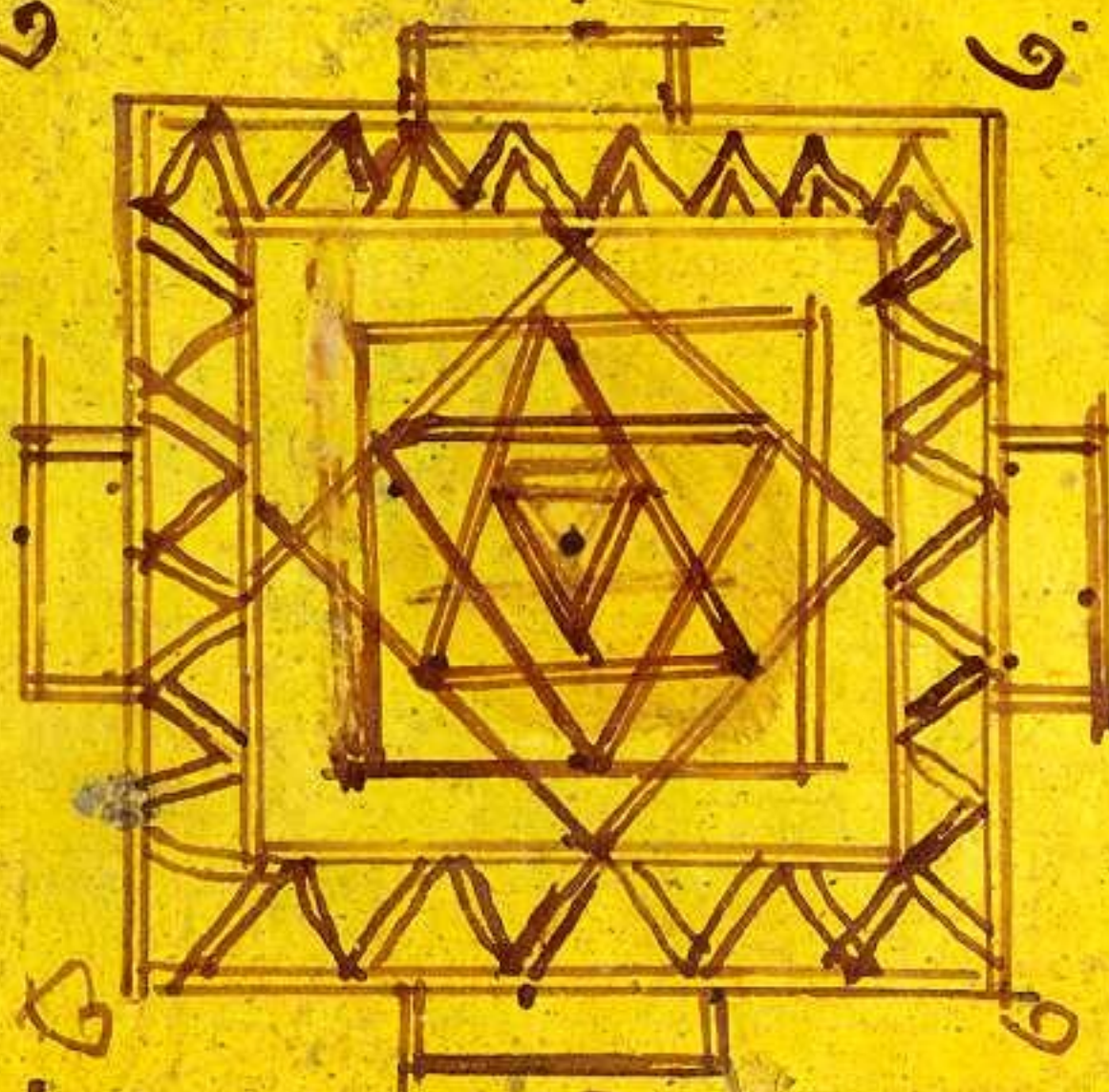
गलन क्रमावि रमयाम कलख



वक्रासि ३



कलु



मूर्धया ७

क्रमाविसयन कलुमाहिहि ध

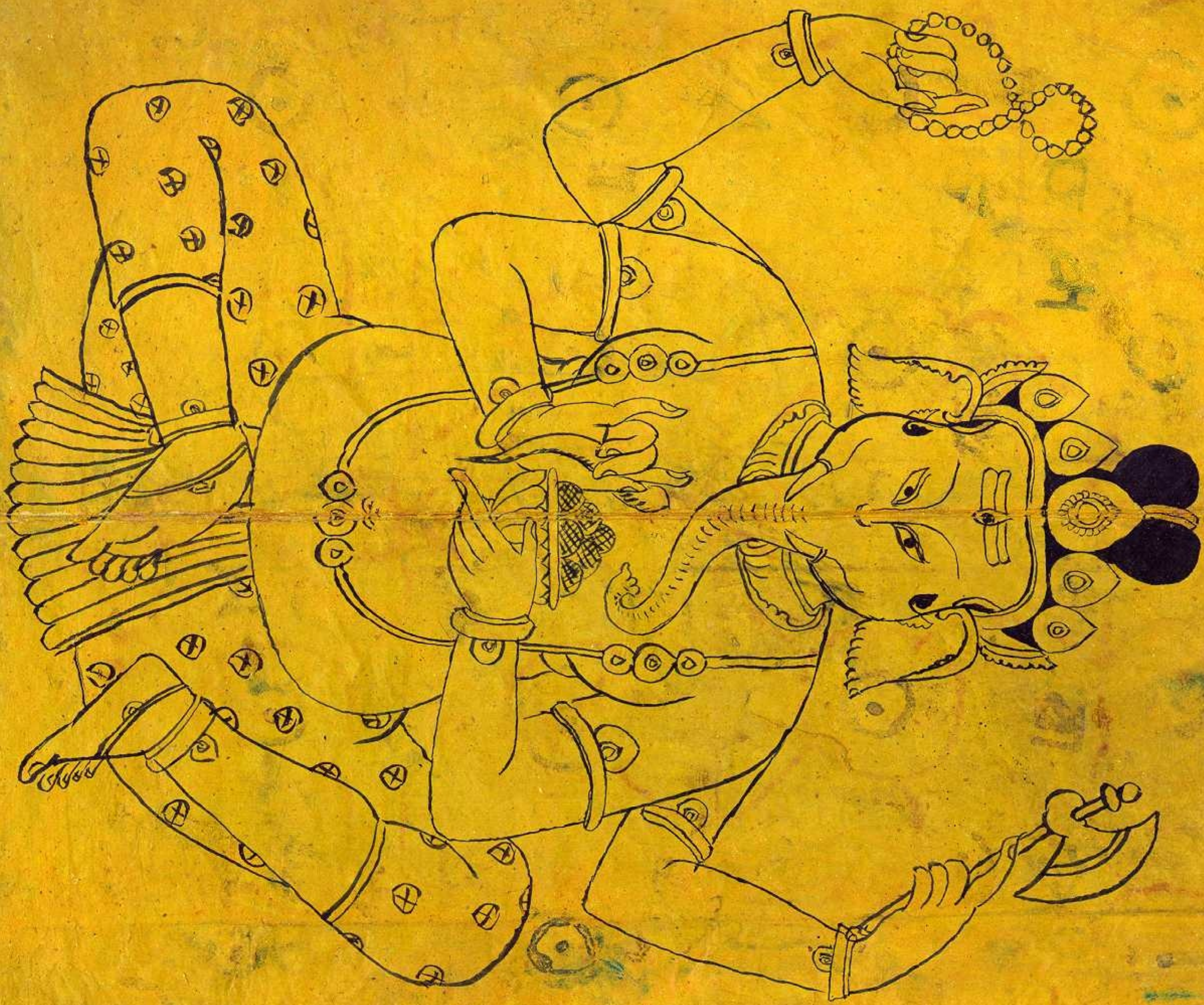


[illegible]

पुंश्रुमेवादिनेकववायङ्गुस्वाहा॥
 उंसयजिक्कायेभययायवीषदस्वाहा॥
 अश्वनर्द्धनायेअस्मायहृदस्वाहा॥
 धगाजिक्कायगीहाम॥
 डिक्कासमस्तनयशानय॥ ॥यनद
 वपायाभामस्तुलमस्तुलाअहनि॥६८
 मूलने॥३३अहनिविध॥
 कामधुर्यादिदिक्कानिह्यायस्वाहा॥
 उंकींणीयनमणिदानन्दनाथदिह्य
 ४स्तुनृशस्वाहा॥
 उंकींणीवदूकयागिनीमहागलायनि
 कथयास्तुगशस्वाहा॥
 उंकींणीकामधुर्यादिषाहागिह्यायस्वाहा
 उंकींणीनिधिन्यायस्वाहा॥
 उंकींणीउलाकमारुनवक्रायशस्वाहा॥
 उंकींणीवाक्कवडुनप्रदवपायअलि
 मादगाकिशशस्वाहा॥
 उंकींणीभभभवडुनप्रदवपायवक्र
 न्यादिदवपायशस्वाहा॥ मु
 उंकींणीअनर्द्धवडुनैदवपायसर्व
 सेकाहिन्यादिमूडादवपायशस्वाहा॥
 उंकींणीसर्वसामूवकवक्रायस्वाहा॥
 उंकींणीसर्वभभभनकवक्रदवपायस्वाहा

उंकींणीकामाकर्षयेमादिह्यस्वाहा॥१॥
 उंकींणीसर्वसेकारुकवक्रायस्वाहा॥
 उंकींणीसर्वसेकारुकवक्रदवपाय
 ४अनर्द्धकस्तमादिह्यशस्वाहा॥३॥
 उंकींणीसर्वसेरामयदायकवक्रायस्वा
 उंकींणीसर्वसेरामयदायकवक्रदव
 पायश्वसर्वसेकारिह्यादिगाकिशस्वाह
 उंकींणीसर्वार्थसामकवर्द्धिर्दगमनव
 क्रायस्वाहा॥४॥ ॥उंकींणीसर्वार्थ
 सामकवक्रदवपायसर्वसिद्धिप्रदाध
 वपायशस्वाहा॥५॥
 उंकींणीसर्वनकाकनानर्द्धगमनवक्र
 यस्वाहा॥ ॥उंकींणीसर्वनकाकनव
 क्रदवपायशस्वाहा॥६॥
 उंकींणीसर्वभागहनवक्रायस्वाहा॥
 उंकींणीसर्वभागहनवक्रकायस्वा
 उंकींणीसर्वभागहनवक्रकायवक्रदव
 पायश्वकामधुर्यादिवाहद्वपायशस्वाह
 ॥१॥उंकींणीअहकागजिकागमभदव
 पायकामधवनायहयश्वदवपायस्वाहा॥८
 उंकींणीसर्वसिद्धिपदवक्रकायवक्रायस्वाहा
 उंकींणीकामधुर्यादिसर्वसिद्धिपदव
 क्रदवपायशस्वाहा॥९॥





শ্রীমদ্রামায়ণ









ॐ नमः श्रीय नंदव नाथे नमः ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

अथो श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ यथा राज्ञः ॥
ॐ अथ यादि अथ वलुमणुल
कार्त्तव्या कथनवनावर्त्तन क
र्त्तनिलिगियन नस्मै श्रीगुरुभ्यो
नमः ॥ श्रीनाथादिगुरुभ्यो न
यार्त्तव्या ० अथ केनर्व सिद्धिं रथा
वदकथययदयुगं दूरीकर्मिभ
सुर्वीवाभवा विवदुर्थासि न
वर्कवीनावनिवधश्चर्क श्री म
न्मालिनीमनुनाडासाहिगिवह
गुदमणुल ॥ मायाकलुलनिवि
यामधूमगीकालिकलामाननी
मानि विविद्रयाडाया रणावर्त्त
यवालिवागमकवो ॥ अकिं रक्ष
नवल्लरादिनयनीवाच्चादिनि
केनवी ॥ कोकालोदिनयायन
यनमयीमानकमानोदिसि ॥
नमस्तुभ्यं नमः ॥ सिद्धिलक्ष्मी
महाजगताय नमः ॥ नामलादवी
नाडालक्ष्मी नमः ॥ अथ ॥ श्रीमन्म
लामलाकाली निर्वो नयददा

अथ श्रीभाद्रकानाथनाथि
दगावकुपनां रुद्र ॥ सिद्धिं नम
क्रियालक्ष्मी वृद्धिं नमः ॥ नागमि
नृद्धिं नमः ॥ नागमि नमः ॥
गुरुं नमः ॥ सर्वविद्युगमर्त्तन
वैभानि कर्त्तव्यं नमः ॥ अथ यद्वै
कामिं च लक्ष्मीं सनक्तिवर्द्धनं ॥
यथामां लक्ष्मीं नां कर्त्तव्यं
रुद्रं रुद्रं नां रुद्रं रुद्रं रुद्रं ॥
ॐ नमः ॥ रुद्रं रुद्रं रुद्रं ॥
अमृककामनया श्री ३ स्वस्वद
वगाय ॥ अथ यवानयुजा निमि
र्यथं यथा राज्ञेयं समर्थं यामि
नमः ॥ अथ यवक ॥ यथा ॥ गमय
थाना मसाधका यमर्त्तव्यं क
मणुनय यथा नैसमर्थं यामि
नमः ॥ ॥ नोपिय ३ वाना म
नु नय्यामा ॥ उल्लसं काना ॥
सुयार्थो विग ॥ ॥ अथ यादि
कोपि कोपि समां रुद्रं न
वाययकां नां कर्त्तव्यं ॥ य
श्री ३ स्वस्वदवगायि र्यथं स्व
स्वदवगायि वाना नयुजा नि

मिथुर्ध्रीसूर्याय नमः
 धर्मे नमः ॥ **गुरु नमस्कान्** ॥
 अरवणुमल्लाह्यादिन ॥
 धनादानदृङ्गाय नमः ॥
 काग्यावदृङ्गायाय ॥
 धीप्रोगलपय नमः ॥
 धीप्रोकाक्षय्यालय नमः ॥
 धीप्रोगर्गिस्वनिधे नमः ॥
 धीप्रोवयद्यनिधे नमः ॥
 धीप्रोगङ्गाय नमः ॥
 धीप्रोययमूनाये नमः ॥
 धीप्रोलैलक्षे नमः ॥
 धीप्रोसुसवस्थे नमः ॥
 धीप्रोदानप्रो नमः ॥
 धीप्रोदरुथे नमः ॥
 धीप्रोदानदवगये नमः ॥
 धनलिस्वसिस्ववयारवनिधि
 यावदृङ्गायाव आसनयानि
 कटसवाकाव आसनदृङ्गा ॥
 णीगमन ॥ **धीप्रोग** गलपय
 आरन ॥ **धीप्रो** यापिनीस्था
 नेमथ ॥ **धीप्रो** काक्षय्यालय
 वायव्या ॥ **धीप्रो** वावदृकाय २ ॥

धूर्वा ॥ **धीप्रो** कामदवाय नमः ॥
 याश्चिम ॥ **धीप्रो** वसुनाय नमः ॥
 दुर्गे न ॥ **धीप्रो** नस्थे नमः ॥
 दक्षिण ॥ **धीप्रो** यस्थे नमः ॥
 धनलिआसनवाकाव ॥ **सूर्यो** र्ध
 विद्य ॥ **धीप्रो** विन ॥ **आसि** य ॥
 गुरुनमस्कान् लोकयावदृङ्गा ॥
 धूर्वस ॥ **धीप्रो** का ॥ **ॐ** न्याय नमः ॥
 आरन ॥ **धीप्रो** का अरनय नमः ॥
 दक्षिण ॥ **धीप्रो** कायमाय नमः ॥
 नेमथ ॥ **धीप्रो** का नेमथाय नमः ॥
 याश्चिम ॥ **धीप्रो** कावदृङ्गाय नमः ॥
 वायव्या ॥ **धीप्रो** कावायव्याय नमः ॥
 उर्गे न ॥ **धीप्रो** का कवल्लाय नमः ॥
 णीगमन ॥ **धीप्रो** का ॥ **ॐ** गमनाय २
 नेमथयाश्चिमउप ॥ **धीप्रो** का
 अरनकाय नमः ॥
 धूर्व ॥ **ॐ** गमनाय २
 यनमः ॥ **धन** लोकाय नमः ॥
 अथ आसनदृङ्गा ॥ **कर्म** य ॥
 धीप्रो आधावगकि कमलासनाय २
 धुं अस्यापीयथाविमनुस्यमदृ
 रुमवि १२ हर्गलक्कद १२ रुमोदव

गा॥ अस्मन्निधिनिधागा॥

ॐ यथितित्वया धनालोका द
वित्वविष्णुना धना त्वं वधा नयमा
दवी यानि नं क्रनचासनी ॥ कर्मिना
विष्णुकायनम॥

ॐ रुद्रवस्व॥ कर्मासना यनम॥
यथा लकन ॥ धनी ॥ वामरुम्
नङ्गलाकर्ग ॥ अयस्यो नुधरु
गा ॥ ॐ रुगास्वित्सिद्धिगा ॥ ॐ रुगा
विद्युत्कर्ग न गनस्य नुभिवा रु
या ॥ ॐ साङ्गयसद नानाया
रु रुद्रस्वाहा ॥ दलयावा ॥ नसाध
नयाया ॥ ॐ निष्ठासनयजा ॥

अथ निनमरु ० अङ्गनय ॥

ङ्गीर्णीष्टीयुनस्थानम॥ ॐ य न
मयुनस्थानम॥ ॐ य नमसि यु
नस्थानम॥ ॐ य न य नयुनस्था
ददवाक ॥ गंगायतयनम॥
वामवाक ॥ दैदयनयेनम॥
दकडन ॥ दैदयनालायनम॥
वामडन ॥ संसनस्थेनम॥
ददो ॥ ॐ मरुद्रियनसन्धोदव
गाथेनम॥ ॐ नवअनूक्ताकाया ॥

ङ्गीर्णीगा रुद्रैश्चमरुकायकस्या
नैदरुनायमी ॥ नैववा यनम
रु ॥ अन्नरूपा रुमरुमि ॥

अथ रुगसुद्धि ॥ ॐ युनस्मन्ग
यादादिङ्गानय र्यनैयुथिविस्त्रुने
वश्चनमाकालीयी गवर्णवजला
द्विष्टिद्वदवर्गनम ॥ ॐ लंवी ॥ ॐ अय
जालादिना ॥ रुयय नैयुयस्कनैध
नैयाका नययला द्विष्टिद्वदवर्ण
विष्णुदेवर्गनम ॥ ॐ वी ॥ ॐ अयग
नास्थादिददयय र्यनैयुयस्कनैधि
कानाकालस्वित्सिद्धिगा ॥ द्विष्टिद्वदव
र्णैयुयदेवर्गनम ॥ ॐ वी ॥ ॐ अयग
ददयादि कण्ठयय र्यनैयुयस्कनैय
दका ॥ कालयदा विन्दुला द्विष्टिनेनी
नवर्णैयुयदवर्गनम ॥ ॐ लंवी
ॐ अयग ॥

कण्ठदिनेलाटयय र्यनैयुयस्कनैय
स्कनैयुयका नैयुयला द्विष्टिनेनी
वदवर्गैयुयवर्णैयुयला कानैय
ॐ वी ॥ ॐ अयग ॥ रुगयवमा
यामनैयुयददयमैद्विष्टिद्वमा ॥ ॐ
वृक्षनैयुययग ॥

[illegible][illegible]

मूर्द्धि ॥ अं नमः ॥
 डिक्का ॥ अं नमः ॥
 ऊववाक् ॥ कं नमः ॥
 दक्कय्येयं ॥ नमः ॥
 दक्कमनिर्वध ॥ नं नमः ॥
 दक्कअं गुलिमुन्न ॥ यं नमः ॥
 दक्कअं गुला ॥ कं नमः ॥
 वामवाक् ॥ वं नमः ॥
 वामकूर्येय ॥ कुं नमः ॥
 वाममनिर्वध ॥ डं नमः ॥
 वामयश्चिं गुलिमुन्न ॥ णं नमः ॥
 वामयश्चिं गुला ॥ चं नमः ॥
 दक्कवक्का ॥ टं नमः ॥
 दक्कऊान् ॥ ठं नमः ॥
 दक्कगुल्ल ॥ डं नमः ॥
 दक्कयश्चिं गुलिमुन्न ॥ ढं नमः ॥
 दक्कयश्चिं गुला ॥ णं नमः ॥
 वामवक्का ॥ णं नमः ॥
 वामऊान् ॥ थं नमः ॥
 वामगुल्ल ॥ धं नमः ॥
 वामयश्चिं गुलिमुन्न ॥ धं नमः ॥
 वामयश्चिं गुला ॥ नं नमः ॥
 दक्कया ॥ धं नमः ॥

वामया ॥ धं नमः ॥
 धृष्ट ॥ धं नमः ॥
 नाश्चि ॥ धं नमः ॥
 ऊ० न ॥ मुं नमः ॥
 ददया ॥ यं नमः ॥
 दक्कूर्क ॥ न्धं नमः ॥
 वामस्फ ॥ न्धं नमः ॥
 मिन्नखास् ॥ वं नमः ॥
 ददयादिदक्कूर्क ॥ णं नमः ॥
 ददयादिदामस्फ ॥ वं नमः ॥
 ददयादिदक्कया ॥ से नमः ॥
 ददयादिदामया ॥ धं नमः ॥
 ददयादिनास्थानं ॥ नं नमः ॥
 ददयादिमूर्वान् ॥ कं नमः ॥
 ठं निवादिमोहका न्यास ॥
 अथ धारा न्यास ॥
 धारा न्यास विविध भयं प्रलभ्य
 वयावर्णा ॥ धा विना न्मुखा ॥ धा
 नि ननर्क वयं दयद ॥ य धा ॥
 गला ग्राह्य नर्कं य धा निना
 सिन्नु विणी ॥ दवायी ० मय धा य
 प्रमाह का सुन सुन्दरी ॥ धा य
 मास्ति नूयन धा य धा य ॥

अंक ४ अं २

निधाग ॥ अथ अर्चन ॥
नेरं गण्डानन्दान्ममभीमरु
गणयत्प्रभृद्गुणार्थानम ॥
नेरं वं वं वं वं मीमृष्वन्दाय
नेरं नमः ॥
नेरं वं वं वं वं नारायणाय न
धुमायावधम ॥
नेरं नमः ॥ नेरं मया कटाय अ
नामि स्थाई ॥
नेरं वं वं वं वं नेरं मया दाय क
नीत्याद्योषट् ॥
नेरं वं वं वं वं गण्डानन्दान्म
नकनगनयकायास्तु ॥
नेरं वं वं वं वं गण्डानन्दान्म
नगण्डान्ममममममममम
नेरं वं वं वं वं मीमृष्वन्दाय नि
नस्रस्याल ॥
नेरं वं वं वं वं नारायणाय निर्व
यवषट् ॥
नेरं वं वं वं वं नेरं मया कटाय क
वदाय ॥
नेरं वं वं वं वं मीमृष्वन्दाय न
नययायवोषट् ॥

नेरं वं वं वं वं गण्डानन्दान्म
नेरं मया स्तु ॥ अथ अर्चन ॥
अथ अर्चन ॥ गण्डान्दितु स
कागान् नारायणाय विष्णोवध
नायागान् द्वावनाशीनि नस्र
किं सममिवा ॥ गण्डान्दितु नव
रा नकात्तिका नारायणाय क
सुधनाशुजा ॥ गण्डान्दितु गदि
या ॥ अथ अर्चन नारायणाय
कास्तु नारायणाय ॥
निन ॥ नेरं वं वं वं वं विष्णु
मृष्व ॥ नेरं वं वं वं वं विष्णु
अवमिवा ॥ नेरं वं वं वं वं विनायक
कथेनम ॥
रवामिवा ॥ नेरं वं वं वं वं नि
मायागान् नमः ॥
ऊव कसयाग ॥ नेरं वं वं वं वं
द्वयप्रसे नमः ॥
रवकसयाग ॥ नेरं वं वं वं वं
कर्णसुनखथेनम ॥
ऊवनासिका ॥ नेरं वं वं वं वं
नायसुनथेनम ॥
रववनासिका ॥ नेरं वं वं वं वं

यमधये नमः॥
 ऊवलागान॥**उं२गं**टिं न क द न
 यका न्ये नमः॥
 खवलागान॥**उं२गं**टिं द्वि द न य
 कामिन्ये नमः॥
 धधधधधसि॥**उं२गं**गङ्ग क क
 यभा हिन्ये नमः॥
 कधधधधसि॥**उं२गं**नि न इ र ना
 यङ्गाये नमः॥
 धधधधध॥**उं२गं**क यार्दि न गी व्रा
 ये नमः॥
 कधधधध॥**उं२गं**दी र्द्यो डि क्का य क
 लिन्ये नमः॥
 कधधधध॥**उं२गं**क कर्ण य न न्यये
 मखस॥**उं२गं**वृष ध जा य स न दा
 ये नमः॥
 ऊववाद्र॥**उं२गं**कं ग ण ना धा य का
 म नू यिन्ये नमः॥
 ऊवकूर्यन॥**उं२गं**खं गङ्ग न्य य
 सुजाये नमः॥
 ऊवमानिव न्यस॥**उं२गं**सु र्य क
 र्ण य र्थिन्ये नमः॥
 ऊवअरुण लि मून॥**उं२गं**द्यो डि न

गायस्ये नमः॥
 ऊवअरुण ला य॥**उं२गं**कं ल न्य
 दना य वि धु र्थे नमः॥
 खववाद्र॥**उं२गं**वै मा ह्ना ना दा
 य स नू यिन्ये नमः॥
 खवकूर्यन॥**उं२गं**कं वृ ष मूर्ध
 य का म दा ये नमः॥
 खवमणि व न्य॥**उं२गं**ऊ स दा नि
 दा य म दा वि क्का ल्ये नमः॥
 खवअरुण लि मून॥**उं२गं**आ मा
 दा य वि क टा ये नमः॥
 खवअरुण ला य॥**उं२गं**वृ ष मूर्ध
 य धू म्ना ये नमः॥
 ऊवडनू मून॥**उं२गं**सू स र वा य रू
 खे नमः॥
 ऊवदू०॥**उं२गं**वृ ष मा दा य रू खे
 ऊवमु०॥**उं२गं**न क या दा य स खे
 ऊवपादयि न मून॥**उं२गं**टिं द्वि डि
 क्का य न मा ये नमः॥
 ऊवपादयि ला य॥**उं२गं**लं प्र ला
 य मा नू थि नमः॥
 खवडनू॥**उं२गं**वै ना य म क न
 ध जा ये नमः॥

नृगनकसु॥**उ०२०६०**मनकटासु
भक्ष्यगर्गिखिनन्वायेनम॥

नृगदीध॥**उ०२०६०**पृष्ठागामसु
नवहृत्पुण्य॥**उ०२०६०**कृत्वायेनम॥
कलु॥**उ०२०६०**वक्रात्मनष्टुक्राय॥
नृन्वायेनम॥

मन॥**उ०२०६०**नीनलोहितात्मन
ननेष्टनायष्टुक्रात्वायेनम॥
नृधसु॥**उ०२०६०**गामदात्मनना
रुधकृक्कात्वायेनम॥

यादनयासी॥**उ०२०६०**नैकैवेद्या
सुनकनवधूमात्वायेनम॥
सुवोहसयायक॥**उ०२०६०**नीजेकै
सु॥**उ०२०६०**सो॥**उ०२०६०**सु॥**उ०२०६०**यनका
त्वादिनवग्रहमिधनद्वि॥**उ०२०६०**नी
महात्रिधनसुन्दयेनम॥

ॐनिग्रहन्त्यासु॥

अधनकन्यासु॥

ललाटसु॥**उ०२०६०**नीजेकै
दवगायवन्त्यायनम॥

ऊवमिरवा॥**उ०२०६०**नीजेकै
नीदवगाय॥**उ०२०६०**नीजेकै
रववमिरवा॥**उ०२०६०**नीजेकै

दवगायरुगा॥**उ०२०६०**नीजेकै
दकक॥**उ०२०६०**नीजेकै
दवगायशुगामायनम॥

वामकरु॥**उ०२०६०**नीजेकै
दवगायक्रमदन्त्यायनम॥
ऊवक्रासु॥**उ०२०६०**नीजेकै
गायनिष्ठाकावायनम॥

रववक्रासु॥**उ०२०६०**नीजेकै
दवगायहिमकलायनम॥
कलुसु॥**उ०२०६०**नीजेकै
नीगिगवन्नम॥

ऊववाह॥**उ०२०६०**नीजेकै
गायेसुमद्रमधनजायनम॥

रवववाह॥**उ०२०६०**नीजेकै
येडहृत्पुण्यनम॥

ऊवकृत्वायेन॥**उ०२०६०**नीजेकै
नीदवगायेकमलनिधयनम॥

रववकृत्वायेन॥**उ०२०६०**नीजेकै
लिदवगायेकमुगायनम॥

ऊवमलिवन्ध॥**उ०२०६०**नीजेकै
वगायेरुगायनम॥

रववमलिवन्ध॥**उ०२०६०**नीजेकै
वगायेयूगायनम॥

ऊवददस॥ जे २७ स्त्रा निदव गये
हुस्त्राय नमः॥

खवददस॥ जे २८ टो विगाथा दव
गाये प्रस्त्राय नमः॥

नाहिस॥ जे २९ थं दं अन्ना थं द
ये अन्ना गाय नमः॥

ऊवकटि॥ जे ३० थं अस्त्रा दव गाय
नमः॥

खवकटि॥ जे ३१ नं थं सूत्र दव ग
ये गाय नमः॥

ऊवखन॥ जे ३२ वं थं द्वाया दव गाय
नमः॥

खवखन॥ जे ३३ द्वाया दव गाय
ये कान्नाय नमः॥

ऊवय॥ जे ३४ थं दव गाय
वन्वय नमः॥

खवय॥ जे ३५ थं निद्वय द
गाये विगाय नमः॥

ऊवककस॥ जे ३६ ले ग निद्वय द
वगाये यी गाय नमः॥

खवककस॥ जे ३७ वं थं द्वाया द
वगाये पुष्पे नमः॥

ऊवया॥ जे ३८ वं स्रुद्ध द

वगाये अंगदाये नमः॥

खवया॥ जे ३९ अं थं दं ४०

वगाये वगाये पुष्पे नमः॥

स्रुद्धा स्रुद्धा यक॥ जे ४१ थं दं

सो ४२ अं थं ४३ दं ४४ थं दं

वन्वय दिसका विं ग निद्वय मिध

नन्वय ले अंगी मद्रा विद्वय स्रुद्ध

०० गि नदं न्यास॥

अथ या गिनी न्यास॥

कण्ठ॥ जे ४५ थं दं ४६ थं दं ४७ थं दं

मां नदं ४८ मम त्वं व ४९ थं दं ५० थं दं

नदं ५१ थं दं विद्वय ५२ थं दं विद्वय

जाकिनी विद्वय नाथ यनमः॥

द्वययस॥ जे ५३ नां दं ५४ नां दं

नीमां नदं ५५ मम नं क ५६ थं दं

रागं नदं ५७ कं ५८ अं ५९ नां दं

या ६० अं नां रुक्मा किनी अं नां रु

क्मा थं यनमः॥

नाहो॥ जे ६१ नां ले निद्वय नां कि

नीमां नदं ६२ मम मां स ६३ थं दं

नीमां नदं ६४ थं दं मलिद्वय ६५ थं दं

मलिद्वय नां किनी मलिद्वय नां

थं यनमः॥

लिं०॥ **ने२ कोंकी कूँकुँ** काकि
मीमांनद२ मममथाधुं **हुराग**
नद२ व४ लेस्वाधिष्ठा नयी०
स्वाधिष्ठा नकाकिनी स्वाधिष्ठा
ननाथाय नमः॥

आधाल॥ **ने२ सांसी सुंमुं** साकि
नीमांनद२ मममअस्मि **धुं धाड**
रागंनद२ व४ लेस्वाधिष्ठा **ध**
नयी०॥ आधालसाकिनी आध
ननाथाय नमः॥

रुमा॥ **ने२ रुंकी कूँकुँ** रुकि
नीमांनद२ मममऊध **धुं** **हुरा**
गनद२ रुंकी आकायी०॥ आका
रुकिनी आकाकायाथाय नमः॥
वद्वन॥ **ने२ कीणी अ० सु**
मुदनयी०॥ **सुरुज्याकिनी सरु**
मुदननाथाय नमः॥

सर्वोक्त्यायक॥ **ने२ धुं अ०**
जाकिन्यादिमुक्तया **धुं** **जिनी**
मिधूनवृषि॥ **धेणी म** **क** **ह्रादि**
यूनसुन्यर्थे नमः॥
००० **जिनी न्यास॥**
अथ ना॥ जि न्यास॥

ऊवया०॥ **ने२ कीणी अ० अ० ०००**
००० **आत्मनभरवनाय नमः**
ऊवय०॥ **ने२ इ० अ० अ० अ०** **आत्म**
भववनासय नमः॥

ऊववृषि॥ **ने२ अ० अ० अ०** **आत्म**
भमिधूननासय नमः॥
ऊवकृदि॥ **ने२ अ० अ० अ०** **आत्म**
कर्कटनासय नमः॥

ऊववा०॥ **ने२ अ० अ० अ०** **आत्म**
भमिधूननासय नमः॥
ऊवलि०॥ **ने२ अ० अ० अ०** **आत्म**
लेनादात्मनकन्यानासय नमः॥

रववलि०॥ **ने२ क० क० क०** **आत्म**
हृलानासय नमः॥
रवववा०॥ **ने२ व० व० व०** **आत्म**
नविधुिकनासय नमः॥

रववय०॥ **ने२ ट० ट० ट०** **आत्म**
नधननासय नमः॥
रवववृषन॥ **ने२ क० क० क०** **आत्म**
स्मनमकन्यानासय नमः॥

रववय०॥ **ने२ व० व० व०** **आत्म**
कुरुनासय नमः॥
रववया०॥ **ने२ य० य० य०** **आत्म**

मात्मनमीनना। अथ नमः॥

सर्वाङ्गसचायक॥ उ० २५० ० मखा
दिवा दग्ना निद्रा विरल्ये श्रीमहा

विष्णु नमस्तु नमः॥

ॐ नमो नित्यासु॥

अथापीठं न्यासः॥

वृक्ष नमः॥ उ० २५० काम नमः॥ ० अथ नमः
मखा॥ उ० २५० वा नमः॥ ० अथ नमः
दक्ष नमः॥ उ० २५० नमः॥ ० अथ नमः
वाम नमः॥ उ० २५० विवर्द्धनमः॥ ० अथ
दक्ष कर्ण॥ उ० २५० नमः॥ ० अथ २॥
वाम कर्ण॥ उ० २५० का नमः॥ ० अथ २
ऊव नमः॥ उ० २५० मूर्ध्नि विधीयते॥ ० अथ २
खव नमः॥ उ० २५० अर्चुदय॥ ० अथ नमः
दक्ष ग॥ उ० २५० आभारक अथ नमः॥ ० अथ
वाम ग॥ उ० २५० नमः॥ ० अथ नमः
ऊव ॥ उ० २५० विमल नमः॥ ० अथ नमः॥
अथ ॥ उ० २५० कामकाटय॥ ० अथ २
ऊव दक्ष॥ उ० २५० केला गयी॥ ० अथ २
अथ दक्ष॥ उ० २५० रुद्रुयी॥ ० अथ नमः॥
ऊव नमः॥ उ० २५० कदा नमः॥ ० अथ २
काल मखा॥ उ० २५० अथ नमः॥ ० अथ
दक्ष नमः॥ उ० २५० कपीय नमः॥ ० अथ २

दक्ष कर्ण॥ उ० २५० का नमः॥ ०
दक्ष मलि वध॥ उ० २५० नमः॥ ०
दक्ष अथ नमः॥ उ० २५० मलि वध॥ ०
दक्ष नमः॥ उ० २५० कलानमः॥ ० अथ २
वाम नमः॥ उ० २५० दक्ष काटय॥ ० अथ
वाम कर्ण॥ उ० २५० मकर्षयी॥ ० अथ
वाम मलि वध॥ उ० २५० मर्दयय॥
वाम अथ नमः॥ उ० २५० मर्दयय॥
वाम नमः॥ उ० २५० विवर्द्धनमः॥ ० अथ २
दक्ष काट॥ उ० २५० नमः॥ ० अथ २
दक्ष जान॥ उ० २५० मखाय॥ ० अथ नमः
दक्ष मूर्ध्नि॥ उ० २५० कलानि विधीयते॥ ० अथ
दक्ष पादयुलि॥ उ० २५० नमः॥ ० अथ
दक्ष पादनमः॥ उ० २५० का नमः॥ ० अथ
वाम कर्ण॥ उ० २५० कपीय नमः॥ ० अथ
वाम ऊव॥ उ० २५० कर्णयनीय॥ ० अथ २
वाम मूर्ध्नि॥ उ० २५० विमल नमः॥ ० अथ
वाम पादयुलि॥ उ० २५० विमल नमः॥ ०
वाम पादनमः॥ उ० २५० रुद्रुयीय॥
दक्ष पादयुलि॥ उ० २५० रुद्रुयीय॥ ० अथ २
वाम पादयुलि॥ उ० २५० रुद्रुयीय॥ ० अथ २
युक्त॥ उ० २५० कपीय नमः॥ ० अथ नमः॥
नामो॥ उ० २५० रुद्रुयीय नमः॥ ० अथ नमः॥

उं२ ह्रीं क्लीं कुं३ निरुमन्त्रकाये न
किं धामं कुं३ श्रीमहाविष्णुसुन्द
नीकनि कुं३ दार्यानिमः॥

उं२ सोमं३ कुं३ अन्ननाथे न किं धा
मं श्रीमहाकुं३ विष्णुसुन्दनी क
ननब्रह्म दार्यानिमः॥

उं२ नेत्रं३ सर्वैकाये न किं धाम
श्रीमं३ रुद्रिष्णुसुन्दनी दद
याय कुं३ नमः॥

उं२ क्लीं कुं३ निरुहकाये न किं धा
मं श्रीमहाकुं३ विष्णुसुन्दनी निवस
माहा॥

उं२ सोमं३ कुं३ अनादिवाधये न किं
धामं श्रीमहाकुं३ विष्णुसुन्दनी नि
रायवोषट्॥

उं२ नेत्रं३ स्वगन्ताये न किं धा
मं श्रीमं३ महाविष्णुसुन्दनी कस
दाय कुं३ क्लीं॥

उं२ क्लीं कुं३ निरुमन्त्रकाये न किं
धामं श्रीमहाकुं३ विष्णुसुन्दनी न
ययया कुं३ यवोषट्॥

उं२ सोमं३ कुं३ अन्ननाथे न किं धाम
श्रीमहाकुं३ विष्णुसुन्दनी अमुय रुद्र

कुं३ विष्णुसुन्दनी॥ धाम विष्णुसुन्दनी नमः
अथ॥ सिद्धि लक्ष्मीया नमः॥ वाधना
निव॥ कुं३ अस्य श्रीवृथां निनासि
दिलक्ष्मीमनुस्य॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
मन्त्रस्य॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
ददयस्य॥ श्रीवृथां निनासिद्धि ल
क्ष्मीधवाये नमः॥

अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
यादस्य॥ इति॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
सर्वार्थस्य॥ श्रीकोलकाये नमः॥
ममसर्वार्थसिद्ध्या॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥

अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
यस्य॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥

अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥

अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥

अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥
अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥ अथ॥





वामकर्णो॥ॐ नृगजवक्राय
 दक्षकर्णो॥ॐ रुक्मवक्राय
 रत्नावपागंद॥ॐ कालिव
 क्राय नमः॥ॐ वक्राय
 अथ४ वार्त्तिकाय॥
 वामरुक्मय॥ॐ कपालवि
 श्वकर्णाय॥ॐ
 वाममणिवन्ध॥ॐ अमृतव
 लनभाय॥ॐ
 वामकुर्यान॥ॐ रवद्वान्न
 याग्नरुक्मय॥ॐ
 वामकर्णो॥ॐ अयाग्नानम
 म्भरुक्मय॥ॐ
 दक्षरुक्मय॥ॐ विभूतय
 य॥ॐ
 दक्षमणिवन्ध॥ॐ वक्राय
 अथ॥ॐ
 दक्षकुर्यान॥ॐ मङ्गलवर्ण
 य॥ॐ
 दक्षकर्णो॥ॐ अङ्गनाक
 दय॥ॐ
 अथ॥ॐ
 अथ॥ॐ

तमनेनमः॥ कदयादिषुर्गनम
 ज॥ चकस्त्राननय॥ २५ नृथा निम
 डाकनगरवकनश्चनसमस्त्रिहाय॥
 अथःपात्रकुपानयाय॥
 जेर्कोणीचतुयी०५ यनमः॥
 जे२ अजसनायनमः॥
 जे२ अमिमलुलायदणकला
 थाकात्मनेनमः॥ २५० आसम
 सोऽअमयायद॥ सल॥
 कोसूर्यमलुलायदादहाकला
 तमननमः॥ चतुर्मस्काद॥
 मूलनमाय॥ लखनलाय॥ सोऽ
 अमयायद॥ गा० न॥
 जेकदवायद॥ अवर्गु० न॥
 यवमज्ञा॥ गफनेचउमयिचम
 क्रि० गाकलभवदाया निमज्ञा
 दस्यनयवमज्ञायाकिता॥
 डादीकोन्नेमः॥ मज्ञाकन॥
 गाकदय॥ मूलमज्ञाया॥ १० अ
 मृगमृगा रुवअमृगवविषा
 कोअमृगमृगवय॥ सोऽसुधमृ
 क्कभायमावय॥ चतुर्लदिना
 सिद्धिसामर्थ्यद॥ २ सोऽमरुख

[illegible]

अमु गथा न । वक्रां तु खलु र्म
 र्मि मध्वनसर्गि कव आमु वि न
 महायोगं पीयूषनसमावेदं ।
 अखलुकनमानन्द कनयनस
 धात्मालि । स्वचन्द्रमूयनामन्तु
 निरधककलद्वयिणी । अकल
 क्तमुगा काले शुद्धज्ञानकव
 य । अमु गत्व निरधक मित्रवमु
 निकिन्नद्वयिणी । त्वद्वयिकन
 रुस्य च दत्वाभि गत्सु द्वायिनी ।
 रत्नायनामुगा काले भिविनि
 मूर्धनैक नृ॥ अथ दृजायाय ॥
 सोऽसाम मण्डिताय धाते ण क
 लाद्या क । त्मनेनमः ॥
 तु चरुन्नव नि कलामिच्छा ॥
 अकथमिदं लवाद्याय ॥
 इति आनन्द र्हे नवाय वषट् ॥
 इति आनन्द र्हे नवोषो षे ट् ॥
 इति यै च न न्तपय ॥
 इति नृनृनृनृ नृ नमः ॥
 इदयादि खड्गे न दृजा ॥ दक्ष
 ने ऽपि पात्राय नमः ॥ ऊवखव
 सकलैर्कषड्गे न दृजा ॥

गकिपात्रसः । उं गकिपात्राय
 वलिपात्रसः । उं वलिपात्राय ॥
 मुन्यात्रसः । उं मुन्यात्राय
 शगपात्रसः । उं शगपात्राय ॥
 चन्दनाद्रूपय्यादद्यात् ॥ रधन्
 या नि र्गखमूद्राकन ध्वनसम
 र्मिताय ॥ लिवसमुन्नपद्यो ज ॥
 उं ईं पीपी मुन्नपीयादृकी ॥
 उं पीयनममुन्नपीयादृकी
 उं पीयनममयी मुन्नपीया ॥
 उं पीयनाय नृमि पीयादृ ॥
 मूलन द्वादयस इ ॥
 अथ ॥ अत्तमदृजा ॥
 उं ईं पी अत्तमने पी मरुति दृ
 नसुन्दरी मरुते य चन्दनै नमः
 नकचन्दनै र सिन्दनै नमः ॥
 उं दृगे नमः ॥ दृष्टी नमः ॥ मू
 लनयया ह्रति ॥
 दशुर्धनत्वर्साधय ॥
 यी पथगायादि ॥ पीमर्त्यक न
 र्गखवद्य विलसवत्ता मुगाया
 विनैर्कषा धा ध्वनया निनी ग
 णमरुण सिद्धसमा धि र्गि अ न
 नो

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

त्रुष्टादिनात्मकमत्ताय

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥

३२ विकानमयकं धनं शानम

प्रेरयश्रागहर्णवीआहृमवैग

तद्दयायकलिकाय नमः॥

त्रैलोक्यभाषादिकी कर्मलामनाय

त्रेवक्ष्यगमनाद्यनमः॥

ॐ विक्रयगप्ताय नमः ॥

ॐ नमः शिवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

उ०४ बाभासनायनम॥

ॐ सर्वत्र ज्ञानं ॥ अन्तर्ग ॥

नरैर्वैभक्त्युत्पन्नाय नमः ॥

जे० सा० अमिडा मना यनम०॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥

कनककुपिकाम्बुआवाहना॥

महाप्रयत्नवान्

आवृत्तः प्रवृत्तिः

नमो हि यदमभयनी ॥ तिरव तु
 मद्भावन ॥ सन्निभमयी नमो रा
 नसहस्रकानि पाषा क्रणप्रवले
 यकामेकयश्चवाष्मि ॥ अथानि
 कउननीधकलंदधानी श्रीसुन्द
 रीसमनि विरुषि नरुषाणि ॥
 अथनय्यर्धनमभ ॥ विद्यावगया ॥
 दधणी रुकि सुनरं यविवा नस
 मन्नेग यावत्तयूज यिष्यामि न
 वत्सि सुहिना रुव ॥ अथारुना ॥
 अस्मिन्मभुलस ॥ त्रिभुवनं
 स्नाह ॥ रुगवणीमहि यदसुन्द
 री ॐ नमो नमो २ ॐ रुकि सु अरु
 धिका नैक नमो २ ॐ अरु ॐ
 अमृता कल्याणी रुदनक २ सीम
 रवी कल्याणं या निमद्वाया सकली
 कनली ॥ ॥ आलया निषा ॥
 अङ्कोङ्को य १ ० श्रीमहा विपुनस
 नदीया ॐ ॐ रुया ॐ ॥ अथानि
 धनया ॥ ॥ दधया उपमसिद्धि ले
 द्वायायी ० यूजा ॥
 नमो २ ॐ अङ्गानां दिव्ययी ॐ
 नमो २ यद्यासना यनमभ ॥
 नमो २ अङ्गानां यनमभ ॥

नमो २ ॐ नमो २ अङ्गानां यनमभ ॥
 अथारुना ॥ ॐ यामायना यना
 दधो रवे नरु रुव नमो यो ॐ
 नमो कनागदधो अथानि
 रुमभुले ॥ अस्मीन्मभुले सानि
 रथक नमो २ ॐ ॥ अथाना
 धीना क्रणया ॐ नवनकरी
 नानया जगि न क्रुमासि कलि
 ना रुट रुजवने ला रुसमानां नि
 दा नमो २ रुकि सुनरं यविवा नस
 रुगवणीमहि यदसुन्द
 री ॐ नमो नमो २ ॐ रुकि सु अरु
 धिका नैक नमो २ ॐ अरु ॐ
 अमृता कल्याणी रुदनक २ सीम
 रवी कल्याणं या निमद्वाया सकली
 कनली ॥ ॥ आलया निषा ॥
 अङ्कोङ्को य १ ० श्रीमहा विपुनस
 नदीया ॐ ॐ रुया ॐ ॥ अथानि
 धनया ॥ ॥ दधया उपमसिद्धि ले
 द्वायायी ० यूजा ॥
 नमो २ ॐ अङ्गानां दिव्ययी ॐ
 नमो २ यद्यासना यनमभ ॥
 नमो २ अङ्गानां यनमभ ॥

दानपालायामर्कः॥
 दद्यात्सनाय॥
 तुंरुं मरुवदादिवरुर्ध्वदमस्तु
 सनाय नमः॥
 तुंरुं कनयगादिवरुर्ध्वं गम्
 तुंरुं सनाय नमः॥
 तुंरुं वृद्धगासनाय नमः॥
 तुंरुं विद्वद्गासनाय नमः॥
 तुंरुं ब्रह्मगासनाय नमः॥
 तुंरुं ॐ धनयगासनाय नमः॥
 तुंरुं सदा निदयगासनाय नमः॥
 तुंरुं मल्लेन वासनाय नमः॥
 तुंरुं निवासनाय नमः॥
 आवाहन॥ तुंरुं निनाका
 ना निलालम्बा निर्वोल्गणीय
 वदी वज्रमाय धनी नित्या सा
 निरुधक नमस्तुते॥ अथ धनः॥
 वृद्धादि धनकयगाय निति दिव्य
 किर्ति मरुधुर्ध्वेन वा निवाय लया
 नलम्बा गच्छाद्गदगाय नस्तु
 दिदमाह यथा हिता रुगवनीय

नामादमास्या॥ सिद्धं रुको लकषि
 मद्रुधनगार्ध आरुणधनी मद्र
 नमानवयकि वरुर्ध्वं॥ अन्ता क
 णाय नस्तु मद्रुधनया गयार्ध स्वर्ग
 गवानक लिप्ता कि गया जियद्वा
 ॥ अथानवर्धनमः॥ थियावजय॥
 दवागिरुकि सुनरुं ह्यादि॥
 गीष्टु ककादवी ॐ हगद्रु ॐ ह
 निरु र्स्वाहा॥ द्या गय निरुगा॥
 तुंरुं गार्धोर्ध्वं ३ गीष्टु कका
 लीधवाद्या ॐ रुद्रा गम्॥
 गी सुन्दरी गी सिद्धि लक्ष्मी गी गुरु
 द्वाकाली स्वर्ध्वं ३ ध्या गाय
 वा नयुजा॥ आसुर्ध्वं नमः॥ स्वा ग
 नमः॥ या धी नमः॥ अर्धनमः॥ आ
 वमनीय नमः॥ मध्वर्धनमः॥
 धनवावमनि धनमः॥ पुर्ध्वस्वान
 नमः॥ वरुधनमः॥ आरुधनमः॥
 वदन॥ मदनया ऊनसिद्धं कर्ध्वं
 दिस्त्रालिर्धमया निधदिर्धं रुद्रा
 वदनं य निष्टु कगा॥ नक वदन॥
 गी नक वदनं दिध्वं जवायावक
 र्धनिर्धं जगद्दस्य कर्धवा गुरु

लज्जगदीश्वरी ॥ सिद्ध ॥ दी
 गीवाला कैंकिल लम्हासा गन्ध
 कैंगल्युशुं लोका मारुनेदवी
 सिद्धलोकनमोद ॥ ऊर्यापवि
 त ॥ ऊर्यापवितीय नर्मयविर्ष्युर्
 यणउसरुर्गुनसा अयद्रुमर्क
 युधर्मचसर्ग ऊर्यापवितीयनम
 मुर्गुर्गु ॥ यय ॥ ऊवायना ऊ
 गाविल्व चयका र्णकयागदी
 कनवी नमनवर्क गुरुणउग
 दीश्वरी ॥ धूय ॥ वनस्य निवर्ष
 न्युर्गु गीदाद्यगधरुषण अय
 र्गसर्वदवाना धूया र्गय निगुर्क
 गा ॥ दीयनेवर्गनम ॥ सारि
 र्गय याङ्गलि र्गय मूर्गनमस्तन
 अथदद्यादक कल्लेण कल्लेण
 दक्रकस्य वापस सिन्धुमूर्गु
 उं अर्ग ॥ र्ग ॥ सुधम ॥ उं अ ॥ र्ग क
 सुधक ॥ उं द ॥ र्ग ॥ सधलि ॥ उं
 क ॥ र्ग ॥ सध ॥ उं अ धानक
 यनम ॥ वयासना यनम ॥ आना
 युर्गु मुटिकसर्कार्ग जिन्धु च
 नुभोलिकी वनदारुयर्गु र्गु च

मूत्रामालाधनेरुनी नर्वध्वात्ताम
 रुधर्व उं द्रकोमाथ सिद्धिर्द ॥
 धमनयर्गनम ॥ आवाहना दिवद
 नाद्रुयर्गनम ॥ उर्गु अलि दूजा ॥
 उं द्र ॥ र्ग ॥ गीय नम ॥
 उं २ उं द्र ॥ दिता कया लस्थानम ॥
 उं २ अ नना यनम ॥
 उं २ उं द्र ॥ र्ग ॥ नम ॥
 उं २ वलिधनम ॥ धिर्गु अलि ॥
 उं २ र्ग ॥ मूर्य अया यमूर्गी
 नमरु र्गनवायमरुल्लक्ष्मी कि
 सहिगायेनमधुग्यादका ॥
 उं २ र्ग ॥ सार्गु कल्लेण यणीया
 उं २ र्ग ॥ वलिधय ॥ उं २ र्ग ॥ स
 उं २ र्ग ॥ दूर्ग कल्लेण ॥ उं २ र्ग ॥ य
 व लिधुर्ग २ सारु ॥ उं २ र्ग ॥ क
 यस्तन ॥ नर्ग ॥ यधीस कल्लेण
 उं २ र्ग ॥ लनयर्ग ॥ सुचुयल्लवधु
 र्ग ॥ र्ग ॥ कययमात्ता ॥ उं २ र्ग ॥ उं २ र्ग ॥
 विधयमानि र्ग ॥ यवा र्ग ॥ र्ग ॥ क
 रुमूर्गलिधर्ग ॥ कयर्गनमा मि ॥
 र्ग ॥ र्ग ॥ ययेनम ॥ धनवा कनक्रक
 लेलेक्ष्मी नम ॥ धनवा कनसिधुम ॥

अथ क्रमद्वयम् ॥

सर्वगक्रमनायनमः ॥

मूलनमः ॥ वरुसिकाय ॥

सोऽम्नाय रुट् ॥ लखनराय ॥

सोऽम्नाय रुट् ॥ गजन ॥

उकवचाय रुट् ॥ अवधुं ० न ॥

यवमृदाकन ॥

अनन्दरुनवाय सुष ॥

दधेनमः ॥ मूलन १०

उं अमृग अमृग रुट्

अमृगवाग्लि अमृगिग्रावय २ से

रुसः ॥

कलकमृकानाग्रायाय २

अन ॥ लाका लसेनिक

दवा विन्दयाज कला ७

रौभादिनीदवदवानि अमृग

सीयना नमः ॥ दृज ॥

अं अमृगाये ग्रीयाय ॥

नेरुम्नाय ॥ सुषाद से

वोव ॥ लिट्

क्र २ स्वारु ॥ व ॥ लिविप

ऊय ॥ साद्रुसः ॥ स्वारु ॥ स्वारु ॥

यद्युया ॥ ससमृद्वका लणी विन्द

नृपिणी सुधादवीयना ॥ किने
मामिक्कानरुनदायर्क ॥ रथनम
दाकन ॥ ०० निरुमृद्वज न ॥

दवावापसमरुपाय नृद्वज ॥

अमृगपञ्जलैरुया ॥ ग्रीयाजनेरुया ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥ दृज ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

नेर्कोणीमलुलायनमः ॥

॥

नवा यदसह

आमन्दबोधोपर

अ० आ० सा० द० दयाय नमः ॥
ने० का० सा० लि० नमः स्वाहा ॥

५॥ श्रीगो० निरवायवप्रद॥

ॐ श्री कवचाय नमः ॥

सुखं नानाया यवावदं।
मोक्षमयम्।

श्रीपद्मदेवप्रसादात्

बालविद्या। श्री यमुक यमुयनद

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यिचदगानउय ॥ स्तोत्र ॥ सुव

नन्दमयीदिव्यकादलनयन

नमो भगवते वासुदेवाय

अथ कामादिपूजा

उ० कामादिदशोपनिषत्

मधुनामनायनम

हुभक्तमधुनम। नू०। वा। म।
वानवलिनी। नक्तमधुनम।

नकर्मसावसागिनी॥ नकदूष

दशदश सिद्धनामविग्रहं ।



उद्वज्जानकान् मृगानि च

विष्णो॥ अकिं बधनाददी विन्दक

कायालधा॥ नलो॥ कौन्दायुनामह॥

दस्येवाहुदा निवासेनावाद्या
पुष्टिगतिर्यकोमादीतिमभाङ्गा

आनन्दार्थिनम॥आचारुन॥ष्टीक

मादी रुदा वि का थो ००० ना ग कु २ ०००

लान्दरसाहा॥ वाअद्यानशा॥

यादीये वेदनादिपथे भवयाद्भेदे

गान्धारी ॥ ३४ ॥ कर्मदोहि

इह मनुकादिपुत्रा बालमही न

श्रीकौन्तेय दया ॥ वज्रपादा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

न्याङ्गुलि ३॥ बलिद्वय॥

काले काले काले काले

माधुवालेष्टकं समाप्तं ॥

त्रिकाणावाय ॥ दशमस्कंधी क

यथाय इहिका नयाव रुय ॥

वर्गस्थानद्वयः॥ इति सङ्गठनम् ।

सुताग्रवर्धना ॥ ३७ ॥



मायाकृणु ननी॥ वा न रावर्थीदि॥

ॐ न्तिको मानादृजा॥

अथ सिद्धि लक्ष्मी पूजा॥ आ क्लो का
या वा॥ न वा क्लो न न्यया क्रि ३॥ ग म य
नी॥ ॐ ह्रूं सिद्धि लक्ष्मी वि भद्र न
वया भीम रा ज नाल लक्ष्मी प्रथा॥ द
या ग॥ आव ल न दृजा या या॥
जेन्दी जा ह्रूं ॥ ग म नि गा र्क्षे व समुद्रा
य न म ॥ ॥ लो क या ल दृजा॥
ॐ ह्रूं जीं ह्रूं ॐ ह्रूं दि द ग दि य
ला य न म ॥

४ व स न ना दि ष ट अ ट र्था ग्री या द॥
४ ग णा व दृ क क्षे ण या गि नो र्था ग्री॥
४ उ अ ज्ञा ना दि द र ह यी ० म य ग्री या॥
४ दृ क र्मे क ग ना थ अ क र दृ का य ग्री
४ म रा क न वी न ग म ग ना दि अ क
र म ग म य ग्री या द॥

४ म रा र्से ना नि नो अ न्वा ग्री या द॥
४ म रा र्से ना न व लो क ट क्षे ण या
ल व न्ने र्था ना ग्री या द का॥
४ अ क र य दी अ क र्थे ण अ क र लिं
ग ग्री या द का॥

४ म र्के टा दि अ क र सिद्धि ग्री या द॥

अ क र गुर ग म ॥

४ म न्न य र्वे ना दि अ क र य र्वे न म न्न
रथ ना दि अ क र ग्री या द का॥

४ उ या दि अ क र यो ग्री या द का॥
अथ अ क र य ॥

४ वृ क्का षा दि अ क र मा र्हा का दं
वी अ नि गा दि अ क र्के न व ग्री या॥
द्वा द रा द ले॥

४ नि वा द वी अ न्वा दि द्वा द रा द
वी अ न्वा ग्री या द॥ म र्का णा॥

४ उं ज कि न्या दि ष णा कि ली ग्री

अथ धि का र ॥

ॐ ह्रूं जीं ह्रूं न र्द ग कि ड य व णु द
वी ग्री या द का॥

ॐ इ वि कृ णा कि कि न्म स ना द वी ग्री
ॐ इ वृ क्का ण कि व ग ल म र वी थ वी
अथ म र्थ म अ य र्थ य र्थ ॥

ॐ इ र व र्म ना थ ग्री या द का॥

ॐ इ र व दृ गि ना थ ग्री या ग्री॥

ॐ इ रि ण न ना थ ग्री या द का॥

ॐ इ या ण ना थ ग्री या द का॥

ॐ इ र्मि क ण ना थ ग्री या द का॥

ॐ इ या ण ना थ ग्री या द का॥

४ म र्णु ना थ ग्री या ४ अ र्थ व नो थ
४ क र्ण ना थ ग्री
४ व न नो थ ग्री

वदुकाणां च ॥ २ गणवदुर्कैः
यानि नो मदाकायणीयाद् ॥ ३
॥ ४ ॥ २ मदाज्ञानमूर्खमूर्खिकाः
त्यादिषा उणीयाद् ॥ ५ दग्धदलं ॥
६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥
१३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥
१९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥
२५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥
३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥
४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥
४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥
५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥
६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥
७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥
७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥
८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥
९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

मुद्रा यन्मम ॥ ॥ त्रिका वा ॥
 पुं० पुं० कामदूययी ॥ ० काममंगला
 कालिप्रियायादृकी ॥
 २३ जानन्धनयी ॥ ० जानमंगलाकालि
 २४ पुं० निवियी ॥ ० पुं० मंगलाकालि
 पुं० पुं० शानयी ॥ ० शानमम
 लालिप्रियायादृकी ॥ वक्रपुं० ॥
 पुं० पुं० खड्गनिवक्राययीयादृ॥
 २५ श्रीसिंहवक्राययीयादृकी ॥
 २६ पुं० नवक्राययीयादृकी ॥
 २७ कपिवक्राययीयादृकी ॥
 २८ रत्नवक्राययीयादृकी ॥
 २९ श्रीगङ्गवक्राययीयादृकी ॥
 ३० श्रीमकनवक्राययीयादृकी ॥
 ३१ मङ्गलवक्राययीयादृकी ॥
 ३२ पुं० रुद्रवक्राययीयादृकी ॥
 पुं० पुं० पुं० सिद्धिकलात्मिका
 वल्लुपुं० पुं० कालग्रामनिष्ठ
 कालिवक्राययीयादृकी ॥ त्रि
 याङ्गुलिथा निमङ्गनिमस्का न
 त्रिपुनयामलुनमपुं० ॥ अङ्ग
 राना ॥ सविनमयीयदृवी यना
 मगवन्पुं० पुं० अङ्गुलिपुं० पुं०

यनिवाना च्चेनायम ॥ गगापनिव
वयुजा ॥ तिका एम ॥ क्षिति विनिय
मूलनममकगणि विनियानुवि
लाणीमरुत पिपनसुतनीपीप
जंकाणीप्रकाभध्वनीनियानीप
उग्राकामालिनीनियानीया ॥
उठूनिखाक्किचा निखाणीयाद्
उठूनीरुवधुनिखाणीयादुका ॥
उडवाक्किचालिनीनियानीया ॥
उडमरुवर्धध्वनीनियानीया ॥
उमहिवदूथेनियानीयाद् ॥
उमयानिगानिखाणीयादुका ॥
उकूलसुतनीनियानीयाद् ॥
उडनियानिखाणीयादुका ॥
उडनियानाकानियानीया ॥
उडविठुयानिखाणीयादुका ॥
उडसर्वमङ्गलानियानीया ॥
उडकालामालिनीनियानीया ॥
उडविठुयानिखाणीयाद् ॥
उडमूलमरुनियानीयाद् ॥
उडानीनियामययायेपीमरु
पिपनसुतनीनम ॥ पुक्कव
कालामरुध्वपकनविनाम ॥

[illegible]

नाद्वयायेपीमहाविप्रबसन्दर्श
 दासर्वसिद्धाह्निगाथा निमज्जिदग्ना
 ॐ पिप्रथमाववर्णादिगियावन
 जेकींणीसर्वसायानिप्रबक्वका
 यथाजगत्कमलोयनमधःपुष्पा
 अङ्कामाकर्षणीनिर्याकला
 ददीप्तिपादकपिप्रजयामिगयो
 इमावृद्धाकर्षणीनिर्याकला
 ॐ अर्हकालाकर्षणीनिर्या
 ॐ सार्धकर्षणीनिर्याकला
 ॐ सार्धकर्षणीनिर्याकला
 इन्द्रयाकर्षणीनिर्याकलादे
 इमं वसाकर्षणीनिर्याकलादवा
 इमं गन्धकर्षणीनिर्याकलाद
 ॐ विर्णकर्षणीनिर्याकलाद
 ॐ रसेर्थाकर्षणीनिर्याकला
 ॐ नस्मृयाकर्षणीनिर्याकला
 ॐ नानाकर्षणीनिर्याकला
 ॐ वादीजाकर्षणीनिर्याकलादे
 ॐ अस्मात्माकर्षणीनिर्याकला
 ॐ अङ्गमुगाकर्षणीनिर्याकर्ष
 ॐ कीर्तिअर्हगविदाकर्षणीनि
 दाकलाददीप्तिपादकर्षी
 जेकींणीउर्द्वीमाहविप्रबसन्दर्श

यङ्गं धनी प्रीया दूका ।
इदी सर्वविद्या विनी मूद्रा दधी प्री ।
इति धिमा सिद्धि प्रीया दूका ।
नेदी प्री जगत्पुत्रा निन्य धर्म्
यस्य दर्शनं श्रीसुखाय निन्य धर्म्
नकचक्षुः समूद्राः स सिद्धयाः
युष्मद्सुय विवादाः स लक्ष्मी
ऋषवा रुनाः स धर्मो यदा नैऋत
जिगास्तु यो गे सति ॥ अरि हृदि
दिभय दिग्गवना गत वसुधै
रुक्म समय यमु र्ग दिगीया
वर्णमर्चने ॥ इदी सर्वविद्या वि
नीया निमूद्रा दधी ॥ ॐ नि
दिगीया वन ॥ ॥ रुगीया वन
नेदी प्री सर्वसिद्धा रुक्म चक्रा
य अष्टदल कमला यनमः ॥
युक्ता दिद दिग्ग ॐ धर्म ॥
नेदी प्री कर्मा अनन्त कर्मन्वा प्री
इदं अनन्त भवनाम्ना प्रीया
इदं अनन्त भवनाम्ना प्रीया
इदं अनन्त भवनाम्ना प्रीया

यागिनीनूयाथेऽप्रीमरुद्रियन
 सूचर्थेनमः॥ वृवभमडादण
 ॐतिदधुधर्मवनलाअथयवमा
 वेदोऽप्रीमवार्थसाधकवक्राय
 वहिर्दणभनकाणभयनमः॥
 ३०सर्वसिद्धियदादवीप्रीयाद्
 ३१सर्वसम्यत्पुदादवीप्रीया॥
 ३२सर्वद्वियकदीदवीप्रीयाद्
 ३३सर्वमङ्गलकालिनीदवीप्री
 ३४सर्वकामप्रदादवीप्रीया॥
 ३५सर्वदृष्टविविधावीप्रीया॥
 ३६सर्ववैद्यविनासिनीदवी॥
 ३७सर्वभूम्युन्दनीदवीप्रीया
 ३८सर्वशोकाप्रदायिनीदवी
 ३९सर्वदुःखोद्विगनाप्रीयकप्र
 ४०सर्वान्मादिनीप्रदा
 ३१सर्वसिद्धिप्रीयादका॥
 ३२प्रीयगाः कलकोलथाः
 गित्यः वेदिकदर्शनोऽप्रीसिवा
 र्थसाधकवर्कसमृद्धाभमसिद्ध
 यः सायुधमः सयानेवानाः सा

लकाः नाः सवाहनाः सर्वोपचान
 ३सम्युडिगार्थिगासुनु॥ अकिद
 सिद्धिभददि॥ एनलगतवसुन
 रुक्मसमर्थयर्दुःख्यप्रश्नमाव
 नलाह्वनी॥ कलकोनयागिनीनू
 यानेऽप्रीमरुद्रियनसूचर्थेनमः॥
 ३४सर्वान्मादिनीयाः निमृद्धीदर्श
 ॐतिदधुधर्मवनलाअथयवमा
 वेदोऽप्रीमवार्थसाधकवक्राय
 नकाणभयनमः॥ यद्विमादिवाभ
 ३५सर्वहृदवीप्रीयादका॥
 ३६सर्वेणकिदवीप्रीयादका
 ३७सर्वधर्मरुलप्रदादवीप्री
 ३८सर्वज्ञानमयीदवीप्रीयाद्
 ३९सर्वज्ञाविनासिनीदवीप्री॥
 ३१सर्वधामस्वययादवीप्री॥
 ३२सर्वयापरुनादवीप्रीयाद्
 ३३सर्वानन्दमयीदवीप्रीयाद्
 ३४सर्वनकास्वययिणीदवीप्री
 ३५सर्वसुखिगिरुलप्रदादवी
 ३६सर्वोद्विगनमालिनीवक्र
 र्थनीप्रीयादका॥
 ३७सर्वमरुदकृणप्रदादवीप्री॥

ॐ वा का म्या सिद्धि प्री या दृ र्का ॥
 जे द्रोणी जगता ॥ निग र्ग यथा नि न्य
 ॥ द्वे दि क दर्प ना म्भी सर्व न का
 क न य र्का ॥ सम स्र ज ॥ स सिद्ध य ॥
 सा य धा ॥ स य वि वा ना ॥ सा ल क
 ना ॥ स वा रु ना ॥ स र्वा य वा ने ॥ स
 म्यु डि ना स्म र्थि ना स न्तु ॥ अ रि क
 सिद्धि म द हि ॥ न न ल ग ग व र्स
 ना रु द्धा सम य य र्ग र्ग य र्क म
 व न ल म र्च ने ॥ नि ग र्ग य ॥ नि नी नू
 या ये प्री म रु नि द न स न्त र्थो न म
 र्का सर्व म रु द्गा य ॥ नि म्हा दि र्ग ॥
 ॐ नि य क मा व न ल ॥ अ ध म य म
 जे द्रोणी सर्व ना ग रु न व द्का य ॥
 रु का ल ग य न म ॥ अ न म दि वा म
 ३ अं ॥ ३ नू वा नि नी वा ॥ न द व ना प्री
 ३ कं ॥ ३ नू का म भ व नी वा ॥ न द
 ३ वं ॥ ३ नू भा दि नी वा ॥ न द वा
 ३ रं ॥ ३ वि म ल वा ॥ न द व ना ॥
 ३ रं ॥ ३ अ नू ल म वा ॥ न द व ना प्री ॥
 ३ यं ॥ ३ अ नू रु यि नी वा ॥ न द व ना ॥
 ३ यं ॥ ३ नू सर्व भ व नी वा ॥ न द व ना
 ३ यं ॥ ३ नू को लि नी वा ॥ न द व

३ रं ॥ ३ प्री सो ॥ ३ नि द न ना सिद्धा व द्का
 व न नी प्री या दृ र्का ॥
 ३ रं ॥ ३ व व नी म्हा द वी प्री या दृ र्का ॥
 ३ रं ॥ ३ रु कि सिद्धि प्री या दृ र्का ॥
 ३ रं ॥ ३ प्री ज गता ॥ न रु स्र य ॥ नि न्य ॥ र्ग
 क दर्प ना म्भी सर्व ना ग रु न व र्का स
 म्हा ॥ स सिद्ध य ॥ सा य धा ॥ स य वि
 वा ना ॥ सा ल क ना ॥ स वा रु ना ॥ स
 र्वा य वा ने ॥ स म्यु डि ना स न्तु ॥ अ
 रु क सिद्धि म द हि ॥ न न ल ग ग व
 र्स ना रु द्धा सम य य र्ग र्ग य र्क म
 व न ल म र्च ने ॥ न रु स्र य ॥ नि नी नू
 या ये प्री म रु नि द न स न्त र्थो न म
 र्का र व व नी य ॥ नि म्हा दि र्ग य ॥
 ३ ॐ नि य क मा व न ल ॥
 नि का ल वा म द रु अ य ध य र्ग य ॥
 या न्नि मा दि व रु दि द रु वा मा व र्ग ने ॥
 जे द्रोणी दं दं दं का वूं स ॥ यं ना लो व
 र्ग म र्ग रु रु ल य ॥ का म भ व न का म
 र व नी प र्श व ॥ ल य ॥ न म ॥
 ३ रं ॥ ३ यं ॥ ३ यं भा रु ना य का म भ व न
 का म भ व नी वा या य न म ॥
 ३ रं ॥ ३ यं ॥ ३ अं व नी क न ल म य र्क

मध्वनामध्वनायागमयनम॥
नेत्रेन्द्रांशयांशं सुसुगमयर्क
मध्वनामध्वनी अङ्गलमय॥

हिकांशमय॥

नेत्रेन्द्रांशसर्वसिद्धिप्रदवक्त्रसा
ननामहलिकांशमयनम॥

नेत्रेन्द्रांशं अनिवक्त्रकामगीर्था
लेऽंशं यमिणीगनाधमसिक्क
लां पद्मविद्यायिक००
कुलग्नसकपीकामध्वनीद
वीन्द्रासगकिपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं हर्यवक्त्रजानन्धन
या०० नृपसखागनाधमसिक्क
सुप्रदग्नाविद्यायिक००

नगह्मसकपीवक्त्रध्वनीद
वीविक्रसगकिपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं सामवक्त्रदूर्ध्वगिदि
गद्वन्द्वउड्डीगनाधमसिक्क

सुप्रदिदग्नाविद्यायिकक्रिया

गह्मसकपीरुगमालिनीदवी
वद्वसकगकिपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं हरियनाम्नावक्त्रध
वीपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं इन्द्रादवीपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं गकिपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं जगत् अग्निनरुमथागि
नांशं वदर्शनाङ्गीसर्वसिद्धिप्र
दवक्त्र० समुद्रा० समिद्धय० सा
युध० सयविवाला० सालका०
सवालना० सर्वोदयना० समुद्र
जिगाह्मदिगसन्धु॥ अदि
कसिद्धिभयदिगनागगवस
ना० रुद्रसमयप्रदृष्टि अक्षम
वलग्नद्विनी॥ अगिनरुमय
जिनीनृपायेपीमहात्रियसुन्दर
नेत्रेन्द्रांशं इन्द्रादवीपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं इन्द्रादवीपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं इन्द्रादवीपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं इन्द्रादवीपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं इन्द्रादवीपीयादकी॥

नेत्रेन्द्रांशं इन्द्रादवीपीयादकी॥

वर्णीयादुर्का ॥

३ यां यागिनी स्था नमः प्री यागि
नीदव्यन्ता प्री यादुर्का ॥

३ कां केनया लना थमय नमः
प्री केनया लना थमयी यादु ॥
३ गंगालय दय नमः ३ प्री गंग
यागि नाथ प्री यादुर्का ॥

मूलनमूलसं थमय दुःखा ॥

वालिवि य ॥ अं गुं नो मि की ॥

जेकां प्री नमः दिदवो यजव द
कनाथ कथिलडा टारानरा सुनहि
भण्यु कालमरवसर्व विद्या न्ना ॥
य रसवो य नो नमः हि गे वलि ट का २
इं रुदस्वा रु ॥ कर्म न ॥ वालि द भ
नमः दुद वद कसर्व सिद्धि द भा ॥
नि कथा दुम निख रू ग व ग ल स
विग ॥ अथ या नि वालि ॥ कनि य गुं

जेकां प्री दुर्वद क गु गा वा दि वि ग
गंगाल रु ग ल नि क ल वा या ग
ल वा न ल वा ग नि न य व ल था य
कृण हि गा वा कृणायी ॥ ०१ ॥ यि ०
दि वृ द क न य द धू य दी या लि मा
से ॥ यो गा द व ॥ स दान ॥ गु रु व लि

विधिनाया नुवा न नुव न्या ॥ यां
यागिनी स्था वलि ट का २ इं रु द
स्वा रु ॥ कर्म न ॥ या का वि द्या नि
नी नो द्वा सो न्या द्या ना ग ना य न्ना ।
रव व दी रु व दी वा म च य प्री ग मु
म स द ॥ यो नि म द्वा द र्ग थ ॥

अथ केन वालि ॥ गज न्ये गुं ॥

जेकां प्री कां कां इं के कां क ॥ से रु
न के न्या ला य धू य दी य मा हि गे व
लि ट का २ इं रु द स्वा रु ॥ ॥ कर्म न ॥
या सि न्नु के न नि वा सी व द न्या ल
स कां क न । प्री गा इ र्ग व लि द न न
सर्व न का कथा दुम ॥ गज नी म द्वा
द र्ग थ ॥ अथ गंग वालि ॥ नथ मा गुं
जेकां प्री गंग न्नु ॥ नो गंग ॥ गंग
ला य द थ व व न द स र्व रु न म न म
व ग मा न य मा न य व लि ट का २ इं
रु द स्वा रु ॥ कर्म न ॥ सर्व द्या स र्व
का यो लि नि वि द्यु सा थ य न म म ।
॥ नि कथा रु ग ग र्ग वि द्यु ना रु
॥ गंग कि क ॥ गज म द्वा द र्ग थ ग
य श्र मा गुं ल न ॥
जेकां प्री गुं के सर्व वि द्यु क थ ॥

वैरुगस्थावलिंष्टक २६ स्वरु॥
 रु॥ ॥ अथमरुवावतिविद्या॥
 जेकीं श्रीकाकीं रुटयकाका
 सरुगाध्वनाला १६ प्रयालक
 १७ किचाधमरुवाला १८ टना
 कटपुटना ॥ यो ० कांक्षका १९
 व १६ रुडासरुडासुधमा १७ गड
 मनुजा १९ वेव १७ लजा १९ वि १९
 यम १॥ नानादूयधनादान्यथा
 जिन्थावनवर्तना १॥ नानाधरा
 विनासिन्था ॥ अस्मिन्वक्षसमा
 मिता ॥ समया १९ धनयदान्य
 दान्यवलिंकादिगा ॥ रुच्यनुअ
 मवेदिवी १९ धूयदीयालिरुच्यु
 रुकाददाउमकामान्वाङ्किता
 थर्कदरिभ ॥ श्रीकांक्षवलिंष्ट
 क २६ स्वरु॥ ॥ अथयानि
 नावलि ॥ ॥ जेकीं श्रीसमरुय
 कटपुष्टुयकनसंयदायक
 लकोलनिगर्कनरुस्ययनायन
 नरुस्ययनायनागिनरुस्ययानि
 नागस्थावलिंष्टक २६ स्वरु
 स्वरु॥ ॥ सिद्धिलक्ष्यामूलने

पुष्पकालिंथा मूलनेवलिंविप
 द्विपदयामूलनेवलि ॥
 निवनिनवलिंविद्या ॥ कनभ ॥
 मध्वस्थावलिदवगस्थानम १॥
 वलिदाननसेडका १६ मध्व
 लिदवगा ॥ यथामुखविदनेड
 विधकादगासुव ॥ वटकाद्यास
 ना १६ मध्वक्षमवमिद्धिविधमिना
 ममगातिमुदियदिवामुगर्
 रुसादग १॥ नानावर्नमरुकाकन
 थमर्नवनरुय ॥ यथैग्यास ॥
 यथा १६ लि ३ ॥ ॥ धूयविद्या
 वनस्यानिनसात्यनं गन्ध्याग
 धरुवर्णा १९ धूयसर्वदवाना
 धूयाययनिष्टका १॥ ॥ दीया
 स्वयका १९ मरुगर्ज १६ सर्वेजनि
 मिनायरु ॥ सवाकाचननेअ
 नि १९ धायाययनिष्टका १॥ ॥ पुंम
 मरुवकवर्कगा १९ यथदवीनव
 स्मिका १९ आनकिमिदयुध १९
 रुगममसिद्धय ॥ ॥ मेवय ॥
 अनेवदुर्विधगुर्कनसेयदि
 समनिर्गमयानिधदिगंडरु

[illegible]

साक्षात्संयथा ॥ कश्चाद्यथा ॥
 यश्चमूर्धनिमस्काद्यथा ॥
 वीनयानिनीयुजा, वंनस्थानवि
 य ॥ ॐ नत्त्वया ॥ यस्मिन् विद्य ॥
 आदिप्राप्तमिदं ॥ अथ, दिव्यमपि
 सिंगान्तिमं ॥ विदुषुः ॥ अथ ॥ अथ
 कानेदहिनिर्दुर्गादि ॥ ॥ नय ॥
 यीनयानिनीयुजा ॥ अथ ॥ अथ ॥
 १०॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 कयालारुतिन्तु ॥ अथ ॥ अथ ॥
 सदेह्यापि ॥ अथ ॥ अथ ॥
 लादययाला ॥ अथ ॥ अथ ॥
 काकालेनैववलाया ॥ अथ ॥
 वन्दु ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 सगणधिया ॥ अथ ॥ अथ ॥
 लाप्य ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 महेनव ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 न्यादिगयाविर् ॥ अथ ॥ अथ ॥
 यानिनी ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 नाधिर् ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥
 त्मकमिदसा ॥ अथ ॥ अथ ॥
 वन्दु ॥ अथ ॥ अथ ॥ अथ ॥

जेविष्ठुद्विपदं ॥ **कं** आत्मगतं
 यः अमुकका ॥ **मं** मनयाणी
 स्वद्वदवगायी ॥ **य** यथयथा
 यदा नयूजास्यूर्ध्वं निमित्ता ॥
 नद्यधमया ॥ **रु** रुहामिस्वाहा ॥
 युका ॥ **ग** गुरुसोऽर्था मवर्त्त
 यामनिवृत्त ॥ **ध** धर्मा धर्मकला
 अरुदूर्ध्वं मरुमेरुहामिस्वाहा ॥
 ॥ १ ॥ **इ** इच्छाकामद्विदिया ॥
 धरुक्कुरिवलेदवगागामृत्वा
 दंजा ॥ **ध** ध्यायेत्तवा ॥ **आ** आनिन्या व
 द्दका ॥ **ध** ध्यायद्दिविगन्ता ॥ **रु** रुगदिविग
 दालगम् ॥ **अ** अन्यरुचलेखववादि
 गवलावगालका ॥ **ध** धनका ॥ **रु**
 दा ॥ **म** मूलकलपूजकस्य पिवत्त
 या ॥ **ग** गानिदद्यानिव ॥ **अ** अद्याविसे
 ल्कर्मा धर्म मर्यादिसुनिमगुलं
 वीनवक्त्रिकिर्गावदं ॥ **अ** अस्माक
 समन्तिर्गा ॥ **न** नमस्कृतवक्त्रिकिर्ध
 नमस्कृतानदायकी ॥ **न** नमस्कृतव
 द्दया ॥ **न** नमस्कृतवगावकी ॥ **अ**
 द्दका ॥ **क** कथानिन्याना ॥ **व** वृकाना
 गयेवदा ॥ **रु** रुदववर्त्तमं वक्त्रि

का काननमाभ्यारु ॥ **रु** रुमेमि नव
 सावर्द्धदयागयादर्शे अथयादि
 रि ॥ **कि** क्रिच्चैत्रनयकैरुदृग्ग
 श्वेसमाना ॥ **धि** धिगं वासुद्वि विष्ठ
 द्विष्ठुद्वि कनयाया ॥ **ग** गमिभया
 नन्दे कर्मवर्द्धणी ॥ **क** कुर्याद्विद्यागत्वा
 यदिगीयया ॥ **रु** रुहामिस्वा
 हा ॥ २ ॥ **इ** इच्छाकामद्विदिया ॥
 रुद्यनुमाग नमर्त्वा ॥ **स** सदागार्थ
 विद्या ॥ **आ** आनिनी कथयाला ॥ **ध** ध
 वदरुचवद्विगा ॥ **अ** अरिना ॥ **ग** ग
 रुयदरु ॥ **अ** अलाम नभवत्त ॥ **म**
 लाव नवद्वदरु ॥ **ग** गार्थभिक्क
 रुकी ॥ **ग** गुरुना ॥ **रु** रुदवद्वि
 द्द्वीसंगतिवर्द्धने ॥ **म** मर्याद्विद्व
 रुस्य ॥ **आ** आशीका निवत्सुभ ॥
 नसा ॥ **य** यानासर्वस्य ॥ **ध** धवदवस्यानि
 मिर्त्त ॥ **य** यानासुग नसा ॥ **दि** द्या ॥ **धी** ध
 गां रुवर्द्धे रवर्द्धी ॥ **न** नन्दनुकलया
 गिन्या ॥ **न** नन्दनुकलपूजका ॥ **न** नन्द
 नुयी ॥ **क** कलावाय ॥ **य** यवान्यवनमा
 नमः ॥ **रु** रुदवर्त्तमाना य कलाकला

कयको उरु लोधा नर्म च शुधनु
 मरुद्वच वलवकादि क्रिभुविम
 धर्मधव गले मुनिय नभाका
 दिरि ४ स ध्वदा वन्दया नैह कीय
 मधना चा समाववा धक्रमे ॥ मुं
 निवतत्वा यरुला मिस्वाहा ॥ ३ ॥
 ॥ ३ ॥ धनावर्धनयाय ॥

या लमया म न्या मयाय ॥
 धना रवकुपुजा याय ॥

क्कामिस ॥ कुंदरने रवक गोस्वाहा
 दर ११ म ॥ डीमदि यम दिन्धो

स्वाहा नमः ॥ ॥ धाम ॥
 वेङ्काणी ध्व ११ डी नभा रुगव

गोधा ११ ध्व नो मरुत वलयना
 काम ११ गय या ययु लमनी आ

यआ नो ११ यवद्व नो सो रुगय
 कालिनि सुवो ध्वदा यि नो स ध्व

ददुक्कुदि नी रुगव नी वनधन
 मस्वाहा ॥ ॥ धनी रु नवी युजा ॥

वेङ्काणी का काम नूया दि वरुया
 ०१ नमः ॥

वेङ्काणी यश्च यगासना यनम
 धाम ॥ वध्व कयुष्टा मिका पी य

श्रवकुं चय नमः ॥ धाम क
 एववा नो नि मष्टु मा ला गलिष्ट
 जी ॥ विद्या मन्त्र यदध्वी वध्व
 जिय वरु नवी ॥ निर्या नवम च
 कम्बु ना यक निवर्मिष्ठ यम ॥
 यिप्र वरु नवी ०० रुग गद्व ००
 रुनिष्ट २ स्वाहा ॥ धाम यमिष्ट
 धा ११ लमय वा वयुजा ॥ यया
 भुरलि ३ ॥ नय्य १३ ॥

यववलि विद्या ॥ त्वाक चालि ॥
 मरुत वलिविद्या ॥ धूय दीय ॥

रुय १० स्फो ॥ नमस्काय ॥
 वूय युजा ॥ त्रिव नमस्त ॥ धन

स्वा न नय ॥ वलिविद्या ॥ धाम
 वेङ्काणी वद्व ११ समा विनी साहि

गाय वलिष्ट ११ २ स्वाहा ॥ दरध
 ३ विष्ट चालि ११ साहि गा य वलि

गद्व २ स्वाहा ॥ ॥ का ११ ॥
 ३ वद्व यरु मा सा रुग य वलिष्ट

क्कामिस ॥ वेङ्काणी कालि २ स्वाहा
 धुय नमस्वाहा ॥ ॥ स्फो १ ॥

नूसि द्विना सिरव नू स्मी नू धी
 नीडना सद ११ गद्व विजय ११

वधर्मया लनभा मुक्तं ॥

विश्रवया वदयुयुजा ॥

उत्तं वा हा न कुट सिवकं ॥ मन्त्रं ॥
कांकीं कुं रुट्त्वा हा ॥ अम्भ लिंथा
लिया ॥ पुं कुं ग र्त्वा लि नूय ल
मम रा क्ता दया हि ग ॥ वल्लिका
या नि दानेन दाडनाय चिना
सन ॥ मणुल दय कं वलि कि
य ॥ ॐ दं द्वा ग सं श्या व लिं ग ट्का
र स्वा हा ॥ धूय दीया ॥ विमर्जनं ॥
नास ॥ कुं अं ॥ कुं ग ॥ कुं म ॥ कुं
अ ॥ कुं क ॥ कुं क ॥ कुं क ॥ कुं
नि ॥ कुं नि ॥ कुं क ॥ कुं न ॥ कुं अ
॥ व ग र्त्वा न कुं व कं ॥ स्वाय क्काया
गिंथ ग र्त्वा न दि य ॥ द्रुयया कं क
गिंथ ॥ कया न स ॥ कां ग म श्चो
नम ॥ ॥ वा हा न स ॥ कां ग म कि
काये नम ॥

दृगम ॥ स ॥ कुं या नि स्वाये नम ॥
क्रिया ग स ॥ कुं नि वृथे नम ॥
ऊव क्क सथा न ऊा हा व ग म यणी ॥
यणुया ग म या वि द्य धं वि प्य क म
यधी म हो ग न्ना भ ॥ क्व य वा दया

ग ॥ ३ ॥ दय समज नक ॥ मन्त्र ॥
कांकीं कुं रुट्त्वा हा य द्वा ग म य
कुं रुट्त्वा हा ॥ ऊज म नया गि कं
श्या न वि य ॥ अथ या दि ॥ अम्भ क
र म य नाम अम्भ क वा क्क न कं
कुं ग व लिं ड य दा रु या मि न म म्भ
हा स्व र्ने मे या कि ॥ ॥ हि स या य
यी ग थ ग र्था दि ॥ नि न स व लि ॥
वि य ॥ पुं द र्भ ॥ न क लि स्वा हा
पुं द र्भ ॥ द वा ॥ ॐ हा ग कुं र व लिं
ग ट्का ॥ कुं रुट्त्वा हा ॥ म ग वि
य ॥ न क व लि वि य ॥ धा न र्द ह
क ला मा र्था म र्था मां स म दा वि
या व लिं ग ट्का ॥ ॐ दं मा न ॥ द्वा ग
न क व लि क व ॥ अरु न कु य ॥
क्ता न स र्का न ॥ ल र व न हा य ॥
ऊज लि या न य ॥ क्क ट्त्वं व
लि नूय ल म म रा क्ता दय कि
ग ॥ वल्लिका वि नि दानेन दाड
नाय चिना ग नी ॥ मणुल दय
कं व लि य ॥ ॐ कां गीं कुं क ॥
क्क ट्त्वं र्ने व लिं ग ट्का ॥ द्वा र
ट्त्वा हा ॥ धूय दीय व लि कु य ॥

न्यास॥ कांअ॥ कींन॥ कुंम॥ के
 अ॥ कोक॥ क१क॥ कां६॥ की
 लि॥ कुंलि॥ केक॥ कोभ॥ क१
 अ॥ लंरवनदाय॥ हुं यमुध
 यन्दनोक्तयय१२॥ धनस्वान
 कुवक॥ दृडा॥ विमुक्तस॥ अ
 १३ नम१॥ द्वादो॥ के १२ नम१॥
 मनिद्वयस॥ ७१० नम१॥
 स्वाधिरुक्तन॥ वै ३ नम१॥
 अ॥ धनस॥ वै ४ नम१॥
 क्रमधस॥ रुलेके नम१॥
 गमयणी कान्धक्यालडाकाव
 हुं कालनम१ विद्वद् कर्क
 टायधीमहो॥ नन्नाभाद॥ य
 दादयाने ३॥ द्वादसमउ नके
 हुं अशयेदि॥ कर्णेनकुं य
 नदवकायूडासांगगाधय
 धमनामान्ननणी ३ स्वदधव
 गायया॥ निनीका॥ टियविचु
 गायसयानिवालेय१००० म
 कर्कटवर्णिगुक्त २६ रुट
 स्वादा॥ मूलनऊलाकनंदया
 ग॥ मगाविद्यनकावलिविद्य

स्वभक्त १० भक्तवनदा॥ रुका
 रुयानिचलुिका॥ नृधिनर १०
 नृगभ्यरु॥ गद्यिनाकर्कट१
 वलि॥ ००० नि॥ रुं समस्मान
 लरिवनदाय॥ अंजलियदध
 रुसस्त्वैवलिनृय० ममरा
 रुदयस्मिन्नावलुिकाया॥ नि
 दान्नन॥ दाडुनायत्विनामन्ना॥
 मलुलसदालनयवलि विद्य
 हुं रुं समस्त्वैयवलिनृदका २
 रुं रुटस्वादा॥ धूपदीपविम
 र्जन॥ ॥ न्यासयाय॥ लरिव
 नदाय॥ यन्दनोक्तयय१॥
 षट् वक्तयूडा॥ क१०॥ अ१३
 नम१॥ द्वादो॥ के १२ नम१॥
 नाहि॥ ७१० नम१॥ स्वाधिरु
 वै ३ नम१॥ अ॥ धन॥ वै ४ न
 म१॥ क्रमध॥ रुलेके नम१॥
 गमयणी॥ रुं स१॥ रुं रुं साय
 विद्वद् रुं रववलायधामहो॥ न
 नोभाद॥ ययदा॥ दया॥ न३॥ द्वाद
 समउ नके॥ हुं अशयेदि॥
 अ॥ म॥ क॥ कामनया॥ नको रुं स

वलितं यथा हृदयमिदम ॥
 वक्रवलिस्तनया ॥ १४ ॥
 समञ्जस्तु यथमथर्मकाय ॥
 यन्नलिसंरम्भना विद्य ॥ दक्षि
 ण ॥ माहनीस्तु य ॥ दुष्काय
 णादि विमर्शनात्मानकाय
 क्रमाभाविता विज्ञावक ॥
 कलपकायावशक्ति ॥ यद्यपि
 या ॥ इका लवायुवीर्यं नदय
 विद्यनर्मवक्रयाणि नदय
 कालवर्गोक्तकालदयलि
 वनर्विद्यकवीर्यं सरुम् ॥ १००
 न्दिविन्दनयान्तिनकमन
 यलङ्का नयनान्तिवर्ग इष्ट
 कृत्वा नित्यदरुणिकुलवर्ण
 भद्रुत्थिता हृदयाय ॥ वन्दना
 वन्दनैल्लविकेयवर्णयविर्गया
 यनामर्ग ॥ अयदा हृदयनिर्ण
 लक्ष्मीनाम्भसदानिवा ॥ सिन्द
 वीनभयनीमर्दवीववीनरुम्भ
 विरुधिगी ॥ जेलायक कर्षणाद
 वी ॥ सिन्दनामर्ग मूर्धम ॥ सव
 ना ॥ सिद्धाथदधियावनीसव

पुणसुमूर्ध्वेवभ्यापमं पाथोद्य
 द्यविगीदयनासनकनीवीस्तु
 सिद्धिं कनी ॥ यस्यासंरुवसम्भ
 दऊयकनीवास्तुमहासिद्धिर्द
 दीर्घायाश्चिन्तकावर्णविदय
 नसकुसदाया ॥ १०१ ॥ माहनी ॥
 कुलास्तुमाहनीस्याविद्यकद
 रुणीरुजनीसर्वविद्युं रुणध
 णयिणवा रुयमरुवर्णवीध
 सिनीजाकिर्ना ॥ नका रुणावना
 नागिवसकलयुगासर्वमन्त्र
 लयुका ॥ साधवीमाहनीयदि
 य ॥ १०२ ॥ नयुगासर्वसिद्धयदाय ॥
 स्नानविद्य ॥ नानावृत्तसुगन्ध
 नि ॥ मानार्थाकुसुमाद्भ्यासिर्
 यसिद्धिदंरुद्धयुक्तानाहृन्म
 र्धमि ॥ १०३ ॥ यनामर्गकायिस्तुया
 वक्रकृत्तिताविज्ञावक ॥ निर्व
 नन्दवयानिर्गन्तगणयस्तुभा
 द ॥ लक्ष्मीनाम्भसदानिवा ॥ सिन्द
 लास्तुकमिर्दणवाधनयुग्म
 णवृत्तैर्द्वयलक्ष्मीकुलनयनो
 मन्दगोपी ॥ नवावाधिनिर्गन्तोभा

कवदनेवात्रामनिर्ममरु ॥ १॥ कि
 यागालेवज्ञाय ॥ २॥ अनलिदृष्ट
 यायात्रकायावर्यलघोऽथग
 यादिद्विनायिराविष्कावज्
 रिगय ॥ ३॥ कैवल्यायवीर्यादि
 मद्रोनार्णवसिंहर्णकृष्णनयक
 णिर्णामरुजानन्दमदीर्हनिम्बु
 र्णयमामुर्णवर्णनोविमर्ष
 र्णमकीकनलामूर्कमिकलसाम
 नासिद्धर्षान्नयार्णयदृक्का
 मवययमविद्यामवययन
 माकलामवययनमागिकि ॥ ४॥
 कर्णकोलिकसदा ॥ ५॥ मनसभा
 न ॥ कोमादीर्षा ॥ ६॥ नयज
 जय ॥ ७॥ स्फोर ॥ दालेखयादि
 सर्वमेगभयादि ॥ ८॥ नमस्काद ॥
 नुयासागिकिरुग्मर्यायादि
 नमर्नक्यागिविदस्य ॥ ९॥ तस्य
 यदिवर्चयच्चयन ॥ १०॥ यित्वा
 यित्वायन ॥ ११॥ यित्वा जावत्सुम
 लविभग ॥ १२॥ उधययन ॥ यित्वा
 मल्लिसुन्दरीद्विधा ॥ १३॥ यम
 सयम ॥ नवम ॥ युलि ॥ १४॥ ५६

नमनयाय ॥ १५॥ नययस्मिन्निर्गम
 न्ते समस्य कलस्यव ॥ १६॥ न
 रुमानयतिद्याय ॥ १७॥ सीमभल
 गयी ॥ १८॥ लगतयलिंगायवृक्ष
 यविभनानाविद्ययभर्णरुव
 दविगुरुभद्वमस्यादजाग ॥ १९॥
 द्राडागयविभनोदि ॥ २०॥ निग्रह
 ॥ २१॥ वसुष्कयानादास्वयं ॥ २२॥
 ययायवानर्भरिमनरुलदा
 शुकिमूकिननाना ॥ २३॥ मन्तुना
 सिद्धयसन्तुदुष्कसन्तुमभान
 ॥ २४॥ १२॥ नावृद्धिनाभयमिर्ह
 नाभनयसुव ॥ २५॥ ११॥ शु
 लयदायनारुवन्तु ॥ २६॥ नन्तु
 मतिनखासुवनाईय ॥ २७॥
 ॥ २८॥ १२॥ साधकयागविय ॥
 ॥ २९॥ लिङ्गकियागविय ॥ ३०॥
 गाविन्दविन्दनययदयददद
 वल्गुनिर्दोनेरुक्कुरुक्कनयव
 यरुवनिक्कनयसावकमयको
 मन्तुमालादक्कनगवायारु
 मन्तुनिर्मावणस्मीनयस्मिन्
 सर्वसोगमागरुगवनिवलयल

शुभादाप्रसिद्धं ॥ कुम्भे सुद्विपुल
 प्रयत्नकमलनकैर्मध्यवर्षेण
 दिवाह्वियन्नेवाच्यमानमस्ति
 तान्मानवन्द्यसदा ॥ अथत्मानव
 यङ्कङ्कं रुगवतीं प्रीत्यन्वीसामन
 द्वेत्वाकामदूगामनददुग्धमभि
 यस्तनैरादा ॥ दधौ प्रीतिपुत्रं धनो
 रुगवतीसर्वोयसिद्धं धनो सर्व
 क्लानविनासिनी रुयद्रुचिमुक्ता
 यदाभेदवी ॥ त्वदवीप्रणामासिना
 सनकनीविद्युश्चविध्वंसिनी निर्वि
 द्यं कलजागमाधनयर्दीप्रीसुन्द
 रीरत्ननभः ॥ सवर्षेसाधकः श्वीनाः
 र्णः समयानामिदं धनो ॥ निर्विक
 र्वं नुभवानां कल्याणं यन्मभ्य
 नो ॥ समयानकविद्य ॥ जयनि
 कायाग ॥ नय्येण ॥ द्योपयगाथा
 दि ॥ ॐ अजयनिध्यारुनयाद
 यङ्कङ्कं प्रसन्नसामासुगं माददं
 यर्काजनकसिद्धान्मतिप्रवाधक
 नमामिदाष्टाष्टकयागिनी गण
 यागिनी चक्रमध्यर्कमाहमपुन
 वस्तिर्न ॥ नमामिनिवसानार्थं ॥

नवाभेदवीप्रियं ॥ आथधादनि
 गाभागा समयावात्सेयनाग
 यस्वर्गव्यारुनु दिव्येचक्रस्य
 भलनाम ॥ आथगाभायमेध्या
 न ॥ कोकिनारुसर्वदयालुद्वीम
 नोरुगवाभुयाभुसर्वोयधवगा
 स्युज्ज्वानाद्यनिद्रुकां नोयगा
 नुथागिद्रुगवाधनानादिगस्य
 नाथस्य कलस्य नाक्ताकनाद्रु
 र्नि रुगवान्कुर्णगा ॥ ॥ नन्द
 नुमाधकासर्वे नथनुकेलदध
 काभवन्तु ॥ गामुवीभद्रुयमन्ना
 मुमुनश्मदा ॥ दहकथादि ॥ म
 र्थवपुनूवाकधवायेनवाधद
 गमायागिनी ॥ द्योनिधस्यनदव
 गादयदिधनवदद्यमा ॥ दिदिव
 गा ॥ नकं यथेदिदगर्नरुवनिध
 दाक्ताथमायागिधनस्ययमा
 दिवकोलधर्मयनमेस्याभज
 यश्मद्वेदो ॥ हृद्यनुमागनयादि
 निवदिदिकिपय्यर्कं वृक्षदि
 कचस्युगीकालाभ्यादिगिवा
 दैव ॥ रुगयाक्ताहृद्यनु ॥ श्रीम

नमो नानाधः कृतयुगावनिगच्छ
 यादीननाथः स्वस्तीमावापयन् ॥
 कनिष्ठावलिगच्छिन्नावीननाथ
 साधवामिदधवीकनकमलमरवी
 सिद्धिदामङ्गलाद्याः शरवायादाहु
 यग्यादिगिगणनलीमस्तुकर्कनम
 मि ॥ यनिचकाक्षविलयेययाहु
 यसाधकाक्षयुर्वचुमिदा ॥ या
 दयायकनूगभवलाका यनः यम
 लीममसीनिधला ॥ तुं सनः क
 लिं कथादि ॥ अस्मन्नाह्वयधाय
 यीयीउय रूपगीह्वमलधवस्य
 रवमिमिद्धनमुममवमन्मिमिद्धि
 नमुऊमानस्यसकलयविवा
 नानाश्रयायानोयमेष्टयाऊन
 धनलक्षीसर्गतिस्तनानवृद्धि न
 ह्नु ॥ मन्तानासिद्धयथादि ॥ यध
 णाश्रुललयदायः लमरवचु ॥
 मूलादिवृक्षनाश्वर्कः मून्वि
 यन्नगावृत्ति ॥ विद्याकलुलेनिद
 याः गच्छविन्दययाः तिमकाः गणा
 रुद्धकलानुयाः रावयनमकान
 ने ॥ महाययवनाः नरकवायव

पुन्रयादृक् ॥ आद्यादिगऊन
 इयाः यन्मामुगवाधिनी ॥ सीदि
 चायनमाहेन रुवनामदयुर्गि
 ॥ अन्तननिननयानिनिधनभ
 धमाभं मालान्वकाययविधयकि
 नासीविदा ॥ ये ॥ कस्मिन्नदिदह
 नमनिविदिकागः रुर्भो विधु
 राहामिवसधदिनिदावसानी ॥
 यागोवि ॥ लषकाय ॥ हुकादीव
 यथादि ॥ अमयूकननमयेदा
 मऊमूना ॥ गमदाववी ॥ गममनि
 यल्लक्ष्मनगयाययागवदनि
 वानानसी ॥ सिन्धु ॥ कल्यास्यड
 सनखकिदरुदकिद्वक्काष्टुलाइ
 लुमदकं गीर्धना नसरुवकादि
 रुतदंयीयाययादकं ॥
 याणवक्का ॥ अमयू ॥ धमरवयस
 ॥ रदवनीमूनिनमस्काव ॥ रु
 ॥ मिसऊ ॥ धमरवयाय ॥
 नेको ॥ यागानस्तुसामयी का
 याभिनीहयानु ॥ गय ॥ काया
 वडर्गसाधकनवक्काय ॥
 कोमादीध ॥ गमयदावदुजा ॥

A decorative illustration of a stylized butterfly or flower, rendered in black ink on a textured yellow background. The central element is a circular motif with intricate, swirling patterns. From this center, two large, ornate, circular frames extend outwards, each containing a smaller, similarly patterned circle. The entire design is flanked by elaborate, symmetrical scrollwork and floral motifs, creating a balanced and intricate composition.

29



30



1662
ASHA DEVI

